अमृतवाणी

अक्तूबर 2025- मार्च 2026

पांचवां अंक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम व शाखा तृशूर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अमृतवाणी

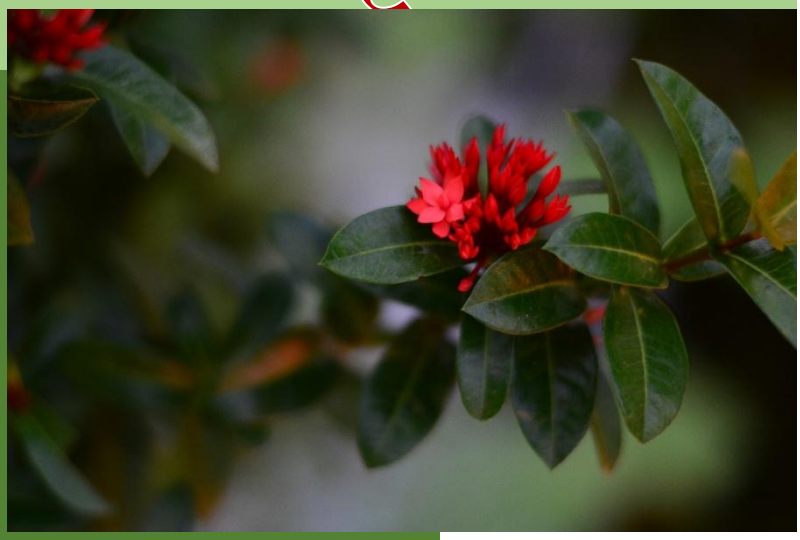

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल व शाखा कार्यालय, तृशूर

प्रकाशन: अमृतवाणी- हिंदी ई- गृह पत्रिका

प्रकाशक: महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, तृशूर

अंक: पांचवां अंक

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

संरक्षक

श्री विष्णुकांत पी बी
महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

संपादक मण्डल

संपादक

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सदस्य

श्री कण्णन एस एस
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार के के
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री वी एस जयचंद्रन
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री योगेन्द्र सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती नीनू एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

विष्णुकांत पी बी, आई ए ए एस
महालेखाकार

हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका 'अमृतवाणी' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । यह पत्रिका न केवल हमारे संस्थान की साहित्यिक और रचनात्मक अभिरुचियों को दर्शाती है, बल्कि राजभाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी सशक्त प्रतिनिधित्व करती है । मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित विविध रचनाएँ पाठकों को पाठकों को प्रेरित करेंगी और उन्हें निरंतर योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेंगी ।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

हार्दिक शुभकामनाएं !

संरक्षक
'अमृतवाणी'

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पी के लालू, आई ए ए एस

अमृतवाणी के पाँचवें अंक का प्रकाशन निश्चय ही प्रसन्नता और संतोष का विषय है । यह पत्रिका हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रति बढ़ती अभिरुचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति की भावना को दर्शाती है । भारत की भाषाई विविधता के बीच हिंदी एक महत्वपूर्ण समन्वयकारी भूमिका निभाती है । राजभाषा के रूप में हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करना तथा उसके व्यापक प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करना हम सभी की जिम्मेदारी है । इस संदर्भ में अमृतवाणी जैसी पत्रिका निश्चय ही राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को सशक्त करने में सहायक होगी । इस सराहनीय पहल के लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार / लेप.प्र.स.III
शाखा कार्यालय, तृशूर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

डॉ अनीष डी, आई ए ए एस
वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन व लेप.प्र.स.I

अत्यंत हर्ष और गर्व के साथ हम अमृतवाणी के पाँचवें अंक को प्रस्तुत कर रहे हैं। निरंतरता की इस यात्रा में यह अंक हमारे सामूहिक प्रयासों, रचनात्मक ऊर्जा तथा हिंदी भाषा के प्रति समर्पण का एक साक्ष्य है। हमें विश्वास है कि इसमें संकलित विविध रचनाएँ पाठकों को न केवल आनंद प्रदान करेंगी, बल्कि उन्हें विचार और संवेदना के नए आयामों से भी परिचित कराएँगी।

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह संस्कृति, साहित्य, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों की संवाहिका भी होती है। किसी भी समाज की पहचान उसकी भाषा और साहित्य से ही निर्मित होती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हिंदी एक सशक्त सेतु-भाषा के रूप में विभिन्न प्रदेशों, भाषाओं और समुदायों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। राजभाषा के रूप में हिंदी प्रशासनिक कार्यों को सरल और सुलभ बनाने के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच संवाद, सहयोग और परस्पर समझ को भी सुदृढ़ करती है। इसी भावना को आगे बढ़ाने का एक विनम्र प्रयास अमृतवाणी भी है, जो हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ उसकी सृजनधारा को प्रवाहित करते हुए राजभाषा चेतना के नव आयामों को निरंतर आलोकित करने का प्रयत्न कर रही है।

इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल के सदस्यों तथा सहयोगियों के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। उनकी रचनात्मकता और समर्पण से ही अमृतवाणी निरंतर समृद्ध होती जा रही है। हम अपने पाठकों के सुझावों और विचारों का सदैव स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपका स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन हमें इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

मुख्य संपादक
'अमृतवाणी'

साहित्यिक

अमृत लेखा - श्री आनंद यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	09
दरमियाँ - सुश्री ए एन देविका, सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोट्टी	10
कर्त्तव्य की सादगी: फ़ाइलों के पीछे छिपा एक जीवन – श्री रविंदर कुमार, सहा.लेप.अधिकारी	11
सपनों के पंख - श्रीमती नीनु एम डी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	13
ऑडिट पार्टी की कहानी - श्री सोनु कुमार बार्नवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	14
मैं खुश हूँ ..... - सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार	16
एक गलती ने मुझे सिखाया - श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	18
आस्तिकता और नास्तिकता – श्री महेश एन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	20
एक यात्रा का अंत - श्रीमती बिन्दु के एन, सहायक पर्यवेक्षक	22
दार्जिलिंग फ़ाइल: एक सरकारी दस्तावेज़ की कंचनजंगा यात्रा– श्री रविंदर कुमार, स.लेप.अधि.	25
उड़ान सपनों की, मंजिल सफलता की - श्रीमती नीनु एम डी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30
व्यावसायिक नैतिकता : लोक सेवा, नेतृत्व और सुशासन का मूल आधार – श्री गोपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	32
कर्तव्य, त्याग और निर्भरता की मानसिकता : आत्म-कल्याण तथा सक्षम समाज की ओर सुश्री रुचिका, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	35
क्या हम AI बना रहे हैं, या AI हमें फिर से गढ़ रहा है ? – श्री अतुल कृष्ण डी, पुत्र श्री कृष्ण कुमार	38

वर्तमान समय में युद्ध : एक गंभीर वैश्विक समस्या, क्वीन मैरी जीजो, सुपुत्री श्री जीजो पॉल	41
भारतीय अर्थव्यवस्था - पवित्रा प्रसाद, सुपुत्री श्री प्रसाद एम, लेखापरीक्षक	42
पारिवारिक अपेक्षाओं के कारण वयस्क पुत्रों और पुत्रियों के करियर को आगे बढ़ाने में आने वाली भावनात्मक सीमाएँ - सुश्री मैथिली जे आर, सुपुत्री राखी पी ओ	43
फलों का राजा आम – श्री योगेश 'नवीन', अतिथि लेखक	46
वह युद्ध जो एकता और बंधुत्व को नष्ट कर देता है - सुश्री मालविका जे आर, सुपुत्री राखी पी ओ	48

कार्यालयीन

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2025

इंदौर संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 2026

हिंदी पखवाडा समारोह 2025

ऑडिट दिवस 2025

गणतंत्र दिवस 2026

लेखापरीक्षा रिपोर्ट

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

श्री आनंद यादव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कलम उठी जब सच की खातिर,
संख्या भी स्वर बन जाती है।
अंक-अंक में छिपी कहानी,
जनधन की मर्यादा गाती है।

लेखा केवल जोड़ नहीं है,
यह विश्वास की परिभाषा है।
हर पंक्ति में उत्तरदायित्व,
हर पृष्ठ जन-आशा की भाषा है।

धन की धारा जहाँ से बहती,
वहाँ सतर्क निगाहें रहतीं।
पथ भटके जो नीति-प्रवाह,
विवेक की ज्योति वहाँ कहती-

"जनहित का जो धन है सारा,
वह पावन अमानत है।"
इसकी रक्षा, सत्य की सेवा,
हम सबकी जिम्मेदारी है।

निःस्वार्थ कर्म, निष्पक्ष दृष्टि,
यही हमारी पहचान है।
पारदर्शिता का दीप जलाकर,
बढ़ना ही अपना अभियान है।

युग बदले, विधियाँ भी बदलें,
डिजिटल हो जाए संसार।
मूल मंत्र वही रहेगा-
सत्यनिष्ठा का उज्ज्वल द्वार।

लेखा की इस तपोभूमि में,
कर्तव्य बने जब साधना।
तब हर ऑडिट, हर निरीक्षण,
जनविश्वास की आराधना।

आओ मिलकर व्रत दोहराएँ,
नैतिकता का दीप जलाएँ।
राष्ट्रधन की पावन रक्षा में,
अपना जीवन सफल बनाएँ।

दरमियाँ

सुश्री ए एन देविका
सुपुत्री जी सी नारायणन पोट्टी, व.लेप.अ

खिड़की के पार
बस की खिड़की से झाँकती मैं,
सड़क पर बहते चेहरों को देखती हूँ
हर चेहरा एक कहानी है,
जो मेरी कहानी से बिल्कुल अलग चलती है।
कभी कोई हँसता है,
जैसे उसके पास वक़्त ने रुककर मुस्कुरा दिया हो।
कभी कोई आँखे झुकाए चलता है,
मानो किसी दर्द ने उसका रास्ता रोक लिया हो।
एक पल को नज़रें मिलती हैं,
और मैं सोचती हूँ
क्या उसे भी कभी लगा होगा
कि दुनिया उसके बिना भी चल रही है?
कितना अजीब है न
हर किसी के भीतर एक छोटा-सा ब्रह्मांड धड़कता है,
जिसका मुझे कोई पता नहीं,
पर वो मेरे सामने से गुज़र जाता है
जैसे कोई अनकहा सपना।
शहर भागता रहता है,
और मैं बस की सीट पर चुप बैठी
यह महसूस करती हूँ
मैं सिर्फ़ एक दृश्य हूँ किसी और की कहानी में,
जैसे वो मेरी में।

कर्त्तव्य की सादगी:
फ़ाइलों के पीछे छिपा एक जीवन

श्री रविंदर कुमार,
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

दफ्तर की ये दीवारें, ये मौन गवाह हैं सब की,
हर रोज़ यहाँ सुबह होती है, उम्मीदें लिए सबकी।
न धूप पहुँचती, न बाहर की कोई आवाज़,
बस कागज़ों की सरसराहट, और ज़िम्मेदारी का राज।
एक कुर्सी है, जो सालों से, बस मिली हुई है,
उस पर हर सुबह एक नई कहानी खिली हुई है।
यह सिर्फ़ लकड़ी नहीं, सेवा का एक आसन है,
जहाँ बैठ कर होता है, राष्ट्र के भाग्य का शासन है।
फ़ाइलें नहीं, ये लाखों लोगों की आशंकाएं हैं,
उनके सपने, उनके दुख, उनकी आकांक्षाएं हैं।

कोई पेंशन की राह देखता, कोई अनुदान में अटका,
हर कागज़ की तह में, देश का भविष्य है लटका।
पेन चलता है तो, सोच-समझ कर चलता है,
एक दस्तख़त से किसी का, जीवन बदलता है।
न शोर है, न कोई प्रशंसा का यहाँ गीत,
बस ईमानदारी का भार, यही हमारी रीत।
बाहर लोग कहते हैं, "सरकारी तंत्र धीमा है,"
उन्हें क्या पता, हर निर्णय कितना नपा-तुला है।
एक छोटी सी भूल भी, ला सकती है बड़ी आपदा,
इसलिए चलती है गाड़ी, धीमी पर पूरी कायदा।

कभी गुस्सा आता है, जब नियम जटिल होते हैं,
कभी दुख होता है, जब लोग निराश होकर रोते हैं।
हम मजबूर हैं, नियमों की लक्ष्मण रेखा खींचने को,
यही धर्म है, सबको एक तराजू पर सींचने को।
इस नीरस काम में भी, एक अखंड साधना है,
यह कुर्सी नहीं, यह देश की एक आराधना है।
हम दिखते नहीं, पर बुनियाद में हमारी मिट्टी है,
हर योजना, हर निर्माण, हमारी दक्षता से ही बनती है।
परिवार की शिकायतें, बच्चों का अधूरा साथ,
हमने सब कुछ न्यौछावर कर दिया, थाम कर यह हाथ।

छुट्टियाँ कट गईं, त्यौहार भी दफ्तर में मनाए गए,
व्यक्तिगत इच्छाओं के मोती, कब के बिखर गए।
दिन बीत जाता है, पर काम पूरा नहीं होता,
जिम्मेदारी का सूरज, कभी अस्त नहीं होता।
शाम को जब घर लौटता, थकान शरीर में होती है,
पर मन में संतोष है, क्योंकि ड्यूटी पूरी होती है।
वर्दी नहीं है, पर ज़िम्मेदारी का कवच है,
सत्ता नहीं है, पर जन-कल्याण का सच है।
हम वो अदृश्य हाथ हैं, जो देश को गति देते हैं,
हम वो मौन सिपाही हैं, जो संविधान को जीते हैं।

जब देश आगे बढ़ता है, और लोग खुश होते हैं,
तो उस संतोष की आहट को, हम अकेले ही सुनते हैं।
यह नौकरी नहीं, यह व्रत है, जो हमने धारण किया,
अपनी पूरी निष्ठा से, जीवन हमने वारण किया।
अंतिम फ़ाइल बंद होती है, तो दिल को सुकून मिलता है,
कल फिर इसी मेज़ पर, एक नया दिन खिलता है।
चलो चलते हैं, कल फिर करेंगे सेवा की शुरुआत,
यही है सरकारी कर्मचारी की पवित्र सौगात।

श्रीमती नीनु एम डी,
वरि. लेखापरीक्षक

सपनों के पंख लगाकर,
मन आकाश में उड़ जाता है,
छोटी-सी आशा की किरण से
जीवन रोशन हो जाता है।

नीले नभ की ऊँचाइयों में
नई दिशा मिल जाती है,
हर मुश्किल की राह में भी
एक उम्मीद जग जाती है।

जब हौसलों की हवा चलती है,
डर पीछे रह जाता है,
मेहनत की हर छोटी कोशिश
सपनों को सच बनाती है।

कभी गिरकर फिर उठना ही
उड़ान की पहली पहचान है,
जो अपने सपनों पर विश्वास करे
उसके लिए सारा आसमान है।

सपनों के ये नन्हे पंख
हमें आगे बढ़ाते हैं,
हर अंधेरी राह के बाद
नई सुबह दिखाते हैं।

चलो भरोसा रखकर मन में
उम्मीद का दीप जलाएँ,
सपनों के पंख लगाकर
नई ऊँचाइयों तक जाएँ।

सोनू कुमार बर्नवाल,
स.लेप.अधिकारी

सुबह-सुबह ऑर्डर आया —
"फील्ड ऑडिट पर जाना है भाई !"
बैग में फाइल, लैपटॉप, चार्जर,
घर वाले बोले — *"फिर बन गए ऑडिटर ट्रैवलर।"*

ट्रेन में बैठकर प्लान बनाया,
आज किस ऑफिस को हिलाना है भैया।
ऑफिस पहुँचे तो बाबू मुस्कुराए,
"सर अभी साहब मीटिंग में हैं" — ये समझाए।

हम बोले — "कोई बात नहीं,
कैशबुक ही दिखा दीजिए यहीं।"
बाबू बोले — "सर वो तो मिल जाएगी,
पर वाउचर थोड़ी देर में आएगी।"

थोड़ी देर में चाय भी आई,
साथ में फाइल भी घबराई।
कहीं बिल गायब, कहीं पन्ना खाली,
हमने सोचा — *आज तो होगी लाली।*

ऑडिट नोट्स जब लिखने लगे,
बाबू जी थोड़ा डरने लगे।
धीरे से बोले — "सर देख लीजिए",
"थोड़ा सा पैराग्राफ कम कर दीजिए।"

हम हँसकर बोले — "ये कैसे हो पाएगा ?
ऑडिट का नियम हमें रोक जाएगा।"
शाम हुई तो नोट्स का ढेर लगा,
ऑफिस वालों को भी थोड़ा डर लगा।

हम बोले — "डरने की कोई बात नहीं,
सिर्फ रिकॉर्ड ठीक रखिए यहीं।"
रात को होटल में बैठकर लिखते पैराग्राफ,
साथ में चलता है चाय का स्टाफ।

और घर से मैसेज आता हर बार —
"ऑडिट खत्म हुआ या अभी भी हो रही जांच सरकार ?"
फिर भी दिल में एक ही बात आती,
ऑडिटर की लाइफ भी मज़ेदार कहलाती।
सच की राह पर चलते जाते,
और फाइलों में छुपे राज़ बताते।

मैं खुश हूँ.....

सुश्री शेबा पी एच,
उप महालेखाकार

सुबह सुबह मैं अपने बिस्तर से उठी । मैं बहुत अच्छा और संतुष्ट महसूस कर रही थी, खुश और आनंदित । दरवाजे से निकलकर जैसे ही मैं बाहर आई, बालकनी में खड़े होकर छोटे-छोटे फूलों और पौधों को निहारने लगी । तभी मेरी दृष्टि पानी की टंकी के ढक्कन पर बैठे एक काले पक्षी पर पड़ी । उसके पैर मजबूत थे और चोंच मोटी ।

अचानक मेरे मन में विचार आया, और मैंने उससे प्रश्न किया – हे पक्षी ! "हे पक्षी ! मेरे दोस्त मुझसे बार-बार पूछते हैं — 'क्या तुम खुश हो ?' आज मैं तुमसे पूछती हूँ... तुम्हारा रंग इतना काला है, तुम्हारी चोंच भी मोटी है, शायद ही किसी को तुम्हारा रूप पसंद आए... क्या तुम सच में खुश हो ?"

पक्षी ने उत्तर दिया... "मुझे किसी की स्वीकृति या आभार की आवश्यकता नहीं है । मैं स्वयं को जैसा हूँ, वैसा ही स्वीकार करता हूँ और अपने आप को सुंदर मानता हूँ । मैं दूसरों से यह अपेक्षा नहीं करता कि वे भी मुझे वैसा ही देखें । मुझे किसी सजावट की आवश्यकता नहीं... इसलिए मैं खुश हूँ ।"

मैंने फिर पूछा — "लोग कहते हैं कि तुम अशुभ हो । तुम्हें देखने के बाद दिन खराब हो जाता है... क्या यह जानकर भी तुम निराश नहीं होते ?"

पक्षी मुस्कुराया और बोला — 'लोग तो सब कुछ मिलने पर भी दुखी ही रहते हैं और कुछ

नहीं मिले तब भी... धन, प्रतिष्ठा, ऊँचा पद — सब कुछ पाकर भी वे संतुष्ट नहीं होते । लेकिन मैंने जीवन को समझना सीख लिया है। मेरे पास अपनी परिस्थितियों को संभालने की क्षमता है, समस्याओं का सामना करने का साहस है... इसलिए मैं खुश हूँ ।"

मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी । मैंने उत्सुकता से पूछा — 'क्या तुम मुझे इस खुशी का रहस्य बता सकते हो ?'

पक्षी ने उत्तर दिया — "बस शांत रहो । चाहे तुम किसी भी स्थान या पद पर हो, अपने भीतर शांति बनाए रखो । मैं भले ही काला हूँ, पर लोग मुझे बुद्धिमान मानते हैं । मैंने स्वयं को स्वीकार किया है... इसलिए मैं खुश हूँ ।"

मैंने अगला प्रश्न किया — "क्या तुम कभी अव्यवस्थित नहीं होते या शोरगुल नहीं करते ?"

पक्षी ने सहजता से कहा — "मैं जिज्ञासु हूँ और सामाजिक भी । मेरी 'कांव-कांव' की आवाज मेरे साथियों को एकत्र करती है । हम एक-दूसरे के साथ रहते हैं... और इसी में आनंद पाते हैं । इसलिए मैं खुश हूँ ।" मैंने मुस्कुराते हुए पूछा — 'क्या तुम्हारे दोस्त भी हैं ?'

पक्षी ने गर्व से कहा — 'मेरा संचार ही मेरी शक्ति है... मेरे पास अपने समुदाय के साथ गहरा जुड़ाव है । मैं लोगों को पहचानने की क्षमता रखता हूँ और अपने साथियों को भी सतर्क करता हूँ... और यही मुझे खुशी देता है ।"

मेरे प्रश्नों का सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा था । तभी वह पक्षी अचानक बोला — "अब रुक जाओ... मैं कौआ हूँ, और अब मुझे ऊँचाइयों को छूना है । मुझे आसमान में उड़ना है... अलविदा ! "बाय.... बाय !!'

यह कहकर वह उड़ गया - मुझे एक गहरा संदेश देकर । मैं वहीं खड़ी सोचती रह गई —

सच्ची खुशी बाहरी रूप, मान्यता या परिस्थितियों में नहीं, बल्कि स्वयं को स्वीकार करने और भीतर की शांति में निहित होती है ।

एक गलती ने मुझे सिखाया

अनुराग शुक्ला,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

योगेंद्र अपने माता-पिता की इकलौती संतान था । उसका लालन पालन भी बड़े लाड प्यार से हुआ था । ईश्वर की कृपा से पढ़ाई लिखाई में भी होनहार था और अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर ही रहता था । बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में भी उसने अपने क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त किया था । योगेंद्र ने अपने जीवन का लक्ष्य भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर अपने समाज और देश के लिये कुछ सार्थक योगदान देना बना रखा था । माता-पित भी उसके निर्णय से अवगत थे और अपनी तरफ से उसका मनोबल बढ़ाने का पूरा प्रयास करते थे । कालांतर में योगेंद्र ने स्नातक कार्यक्रम के साथ-साथ एक अच्छी कोचिंग में भी दाखिला ले लिया । समयानुसार उसने स्नातक परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली और परिणामस्वरूप वह लक्ष्य प्राप्ति की ओर एक कदम और बढ़ा चुका था । माता पिता ने आर्शीवाद देते हुए सलाह दी कि वह कुछ अन्य परीक्षाएँ, राष्ट्रीय व प्रदेश स्तर की जिनका पाठ्यक्रम थोड़ा बहुत मिलता जुलता हो, उन परीक्षाओं के फार्म भी वह भरे । यह परीक्षाएं न सिर्फ एक दूसरा विकल्प तैयार करेगी, अपितु परीक्षा केन्द्र में उत्पन्न होने वाले दबाव और माहौल से भी अवगत होने में सहायक होगी । जवाब में योगेंद्र ने कहा कि वह बहुत सारी मॉक परीक्षाएँ दे रहा है, कोचिंग में भी काफी अच्छी तैयारी कराई जाती है, अतः वह भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में चयनित होने के लिये आत्मविश्वास से भरपूर प्रतीत हो रहा था । माता पिता ने भी ज्यादा जोर नहीं दिया क्योंकि वे योगेंद्र पर कोई दबाव नहीं डालना चाहते थे ।

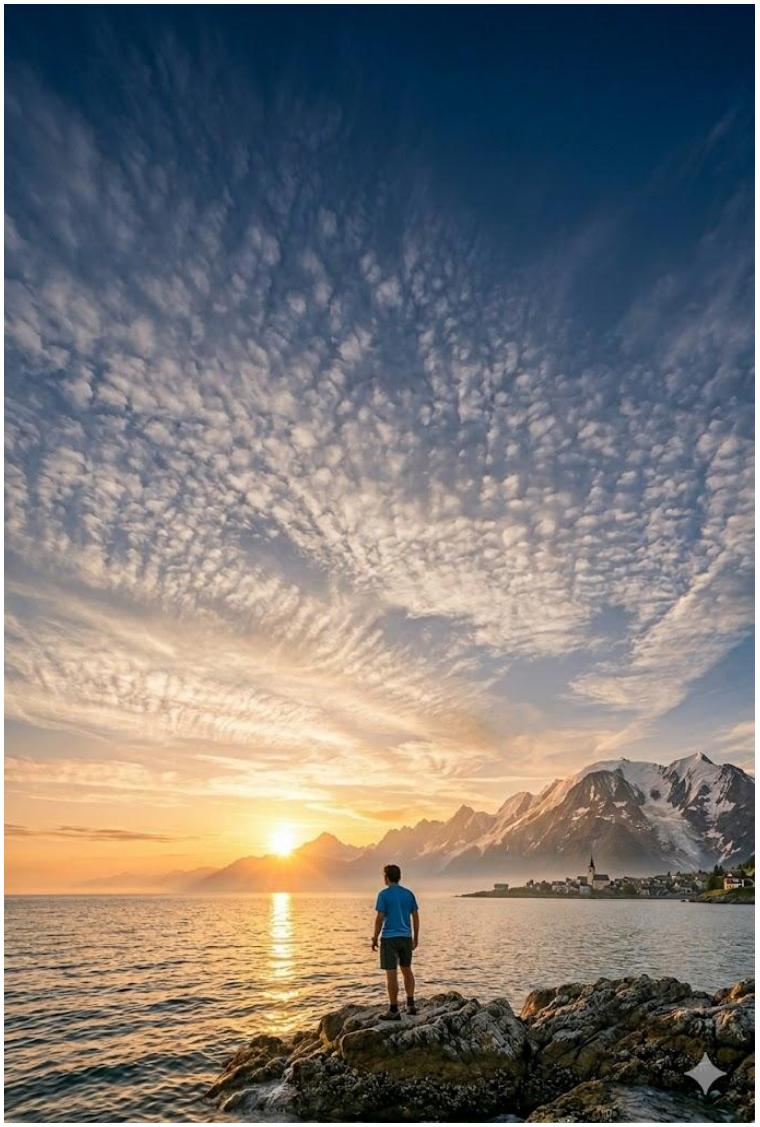

खैर समय बीता और प्रीलिमिनरी परीक्षा का समय भी आ गया। योगेंद्र भी पूरे जोश से ओतप्रोत होकर परीक्षा के लिये गया। मगर न जाने क्यों, अनायास ही वह परीक्षा केन्द्र और इतने सारे परीक्षार्थियों को देखकर व उनकी बातें सुनकर विचलित सा हो गया। अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु यह एक बहुमूल्य पल था मगर एक अजीब सा तनाव एवं अनिश्चितता योगेंद्र के मस्तिष्क पर हावी हो रही थी। यहाँ का माहौल मॉक परीक्षा के माहौल से बिलकुल इतर था। यह भी सत्य है कि इतनी प्रतिस्पर्धा वाली परीक्षाओं में विषय ज्ञान के साथ-साथ दबाव को तालमेल करना भी अत्यंत अनिवार्य है। परीक्षा केन्द्र में योगेंद्र अपना शत प्रतिशत नहीं दे पा रहा था और समय की सुई टिक टिक करके आगे बढ़ रही थी। दबाव, जो योगेंद्र के मस्तिष्क में घर कर गया था, उसकी वजह से उसके प्रदर्शन में असर पड़ना निश्चित था। हुआ भी यहीं, योगेंद्र अपने पहले कदम में असफल हो चुका था, उसका नाम सफल परीक्षार्थियों की सूची में नहीं था।

कंधे झुके हुए थे और कुछ समझ नहीं आ रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पैरों तले जमीन खिसक गई हो। माता पिता से अपने बच्चे की दुविधा कहाँ छुपी रह सकती थी, माँ ने गले लगाके समझाया कि सफलता असफलता जीवन में लगी रहती है, अत: एक बार फिर नए जोश से तैयारी शुरू करो। पिता ने भी कंधे पर हाथ रखते हुए समझाया कि जीवन आनश्चितताओं से भरा है; कभी-कभी संपूर्ण प्रयास भी लक्ष्य प्राप्ति की गारंटी नहीं दे पाता, अतः अपना भरपूर प्रयास तो निश्चित ही करना चाहिये मगर किसी भी लक्ष्य को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिये। योगेंद्र अब संभल चुका था और काफी हल्का महसूस कर रहा था। उसने पुनः पूरी लगन से तैयारी शुरू कर दी थी। इस बार अन्य परीक्षाओं के भी फार्म भरे। परीक्षाओं में भाग लेने से परीक्षा केन्द्र का भय व तनाव भी जा चुका था। और अब बारी थी असल परीक्षा की। अबकी बार नई ऊर्जा एवं आत्मविश्वास के साथ परीक्षा के सभी भागों में अपना शत प्रतिशत दिया। परिणाम में कोई संशय नहीं रह गया था। इस बार सारी अन्य परीक्षाओं के साथ-साथ योगेंद्र ने भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में भी सफलता हासिल कर ली थी। माता-पिता का आशीवाद लेकर योगेंद्र अपने जीवन के लक्ष्य को सार्थक बनाने के लिये पूरे विश्वास के साथ निकल पड़ा था।

आस्तिकता और नास्तिकता

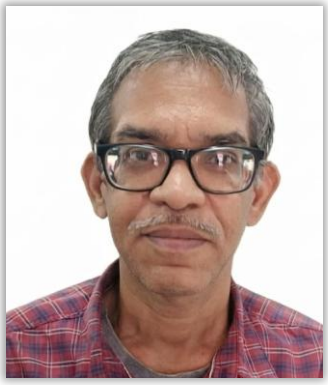

श्री महोश एन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक बार एक नास्तिक धनी व्यक्ति ने स्वामी विवेकानंद को अपने घर दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसका वास्तविक उद्देश्य स्वामीजी का अपमान करना था - वह कुछ उलझाने वाले प्रश्न पूछकर यह सिद्ध करना चाहता था कि ईश्वर में विश्वास केवल अंधविश्वास है। मेज़बान के मन की कुटिलता से अनजान स्वामी विवेकानंद निर्धारित दिन पर उसके घर पहुँचे। आदर का दिखावा करते हुए उस धनी व्यक्ति ने स्वामीजी का स्वागत किया और घर दिखाने के बहाने उन्हें पीछे के तालाब के घाट पर ले गया। वहाँ कपड़े धोने के लिए रखे एक पत्थर की ओर इशारा करते हुए उसने उपहास और तिरस्कार भरे स्वर में पूछा,

"स्वामीजी, इस पत्थर और मंदिर में आप जिस मूर्ति की पूजा-अर्चना करते हैं, भक्ति से पूजते हैं, उस पत्थर में क्या अंतर है? दोनों तो सिर्फ पत्थर ही हैं न ? मंदिर के पत्थर को दिव्यता और इस घाट के पत्थर को सामान्य मानना क्या भक्तों का अंधविश्वास नहीं है ? और क्या आप भी इसे स्वीकार करते हैं ?"

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह आगे बढ़ गया। स्वामीजी हल्की मुस्कान के साथ उसके पीछे-पीछे चले। स्वयं को विजयी समझते हुए वह बहुत प्रसन्न था और भोजन के लिए स्वामीजी को आमंत्रित किया।

भोजन के बाद विश्राम करते समय स्वामी विवेकानंद दीवार पर टंगी एक तस्वीर को ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछने लगे,

"यह किसकी तस्वीर है ?"

धनी व्यक्ति ने उत्तर दिया,

"यह मेरी माँ की तस्वीर है। एक प्रसिद्ध चित्रकार से बनवाई है।"

यह सुनकर स्वामीजी बोले,

"यदि आपको आपत्ति न हो, तो क्या यह तस्वीर मुझे दे सकते हैं ?"

वह बोला,

"ज़रूर, मुझे खुशी होगी," और उसने वह तस्वीर स्वामीजी को दे दी।

तस्वीर को ध्यान से देखने के बाद स्वामीजी ने कहा,

"क्या आप इस पर थूक सकते हैं ?"

यह सुनकर वह व्यक्ति क्रोधित हो गया और बोला, "आप इतने निर्लज्ज कैसे हो सकते हैं ? क्या आप एक बेटे से उसकी माँ की तस्वीर पर थूकने को कह रहे हैं ? मुझे नहीं पता था कि आप इतने नीच हैं !"

तब स्वामीजी ने शांत और सौम्य स्वर में कहा,

"मैंने आपकी माँ पर नहीं, उनकी तस्वीर पर थूकने को कहा है। वह तो सिर्फ कागज़ और रंग ही है, है न ?"

यह सुनकर वह व्यक्ति और भी क्रोधित होकर बोला,

"आप बहुत बचकानी बात कर रहे हैं ! उस तस्वीर में मैं अपनी माँ को देखता हूँ, न कि केवल कागज़ और रंग। यह तो सब जानते हैं कि वह मेरी माँ का प्रतिनिधित्व करती है !"

तब स्वामी विवेकानंद ने शांत भाव से उत्तर दिया,

"प्रियमित्र, मैं भी आपको यही समझाना चाहता हूँ। हम आस्तिक लोग (ईश्वर में विश्वास रखने वाले) मूर्ति में पत्थर नहीं, ईश्वर को देखते हैं। और घाट के पत्थर को उसी भाव से नहीं देखते, इसलिए वह हमारे लिए केवल पत्थर ही रहता है।

अर्थात् किसी वस्तु का महत्व उस वस्तु में नहीं, बल्कि उसे देखने वाले व्यक्ति की दृष्टि में होता है। दृष्टिकोण ही सबसे महत्वपूर्ण है। मनुष्य की दृष्टि ही किसी वस्तु को दिव्यता या सामान्यता प्रदान करती है।"

इन विचारोत्तेजक शब्दों को सुनकर उस धनी व्यक्ति को अपनी अज्ञानता पर पश्चाताप हुआ और वह स्वामीजी के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा माँगी।

"एक यात्रा का अंत"

श्रीमती बिंदु के एन
सहायक पर्यवेक्षक

शादी से पहले ही मैंने और महेंद्रलाल यानी मेरे मही ने मिलकर यह तय किया था कि हम हनीमून के लिए कहाँ जाएँगे। हमने एक सूची बनाई थी - स्विट्ज़रलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, राजस्थान और कश्मीर। मेरे मही एक कथाकार और फोटोग्राफर थे, इसलिए हमने प्रकृति की सुंदरता से भरपूर स्थानों को चुनने का निर्णय लिया।

मैं भले ही लेखिका नहीं थी, लेकिन फोटोग्राफी में मुझे दिलचस्पी थी। शायद इसी वजह से मुझे भी इन जगहों पर जाने की बहुत इच्छा थी। सबसे पहले कहाँ जाएँ, इस पर हमने विचार किया। अंततः हमने अपने ही देश के प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध कश्मीर को चुना।

हनीमून के दिनों में बर्फ की खुशबू महसूस करते हुए, हरे-भरे मैदान, सेब के बाग़, केसर के खेत और तरह-तरह के फूलों से सजी प्रकृति का आनंद लेने की हमने योजना बनाई। एक दिन सुबह हम श्रीनगर पहुँचे और कश्मीर की सुंदरता का आनंद लेने लगे। होटल की ओर जाते हुए रास्ते के दोनों ओर मन को शीतलता देने वाले दृश्य दिखाई दे रहे थे।

रास्ते में जगह-जगह छोटे-छोटे बर्फ के ढेर, हरियाली और मन को छू लेने वाले दृश्य मुझे किसी अद्भुत दुनिया में ले जा रहे थे। यात्रा के दौरान मैं बार-बार गाड़ी से उतरकर इन सुंदर दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करती रही। मेरी इस उत्सुकता को देखकर मही मुस्कुराकर बोले - "लिपि, इतनी उतावली क्यों हो रही हो? हम कुछ दिनों तक यहीं रहने वाले हैं, तब आराम से सब देख लेना।" यह कहते हुए उन्होंने मुझे अपने पास खींच लिया। उनके आलिंगन में उनके दिल का प्यार पूरी तरह झलक रहा था, और मैं उस प्यार की साया में खो गई।

आखिरकार हम होटल पहुँचे। थोड़ी देर आराम करके हम शहर घूमने निकल पड़े। डल झील के चारों ओर टहलना एक अद्भुत अनुभव था। पश्चिम में पोलो मैदान से शुरू होकर पूर्व और उत्तर की ओर डक पार्क होते हुए मौलाना रूमी गेट तक लगभग सात किलोमीटर का यह मार्ग था। डल झील में हर समय शिकारे तैरते दिखाई देते हैं। हम भी एक शिकारे में सवार हुए। शिकारे में फल, सब्जियाँ, फूल, तस्वीरें और यहाँ तक कि स्वादिष्ट भोजन भी बिक रहा था। उनकी खुशबू से भूख और बढ़ जाती थी। कश्मीरी कालीन, कपड़े और कंबल बेचने वाले भी हमारे शिकारे के पास आते रहे। झील के पानी पर तैरते ये रंग-बिरंगे शिकारे बहुत सुंदर लग रहे थे।

वहाँ की खास मसाला चाय "कहवा" भी हमें मिली, जिसकी खुशबू इतनी मनमोहक थी कि मना करना मुश्किल था। कश्मीर आने पर उसका स्वाद जरूर चखना चाहिए। झील के किनारे सेना का एक कैंप भी था। झील के बीच में पहुँचते ही ठंड और बढ़ गई। हमारे कपड़े उस ठंड के लिए पर्याप्त नहीं थे, यह हमें महसूस हुआ। हमारी हालत देखकर शिकारा चलाने वाले ने हमें एक खास

कंबल दिया और कहा - "इसे ओढ़ लीजिए, ठंड नहीं लगेगी।" हमने वैसा ही किया और सवारी जारी रखी।

इसके बाद की यात्रा बहुत आनंददायक रही। खूबसूरत नजारों का लुत्फ उठाते हुए कई किलोमीटर तक झील में घूमते रहे। फिर उतरकर ठंड में एक ही शॉल ओढे हम साथ-साथ चलते हुए पास के होटल में गए और खाना खाया। शाम तक हम वापस कमरे में लौट आए। रात का भोजन करने के बाद हम कुछ देर रात की सुंदरता निहारते रहे और फिर अपने निजी पलों में खो गए।

अगली सुबह हम पहलगाम की ओर रवाना हुए। रास्ता बहुत सुंदर था - दोनों ओर बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ और बीच-बीच में बहती छोटी नदियाँ। मही के कंधे पर सिर रखकर मैं उस यात्रा का आनंद ले रही थी। हमने मिनी स्विट्ज़रलैंड (बैसेन वैली) जाने का फैसला किया, जहाँ केवल पैदल या घोड़े से ही पहूंचा जा सकता था। हमने घुड़सवारी चुनी। रास्ता कठिन और कीचड़ भरा था, लेकिन रोमांच से भरपूर। अंततः हम पहाड़ की चोटी पर पहुँचे - चारों ओर पाइन के पेड़ और चमकती बर्फ, जो सूरज की किरणों में सोने की तरह चमक रही थी।

वहाँ कई परिवार, बच्चे, बुजुर्ग और नवविवाहित जोड़े थे। हर कोई जैसे किसी जादुई दुनिया में खो गया था। हरे-भरे मैदानों में हम हाथ थामे चलते रहे। बातें करते-करते समय का पता ही नहीं चला।

अचानक एक गोली की आवाज़ सुनाई दी। सभी घबरा गए। कुछ ही क्षणों में हथियार लिए लोग हमें घेर चुके थे। उन्होंने एक-एक के पास जाकर जबरन कलमा पढ़ने के लिए कहा। जो लोग कलमा पढ़ नहीं पाए, उन पर गोली मार दी गई। बच्चों के सामने पिता और दादा का गिरना... यह दृश्य असहनीय था। लोग भागने लगे, लेकिन वे दरिंदे पीछा करते रहे।

मैं भय से काँपती हुई मही से लिपट गई। अचानक उन्होंने मेरे मही के सिर में गोली मार दी... उनका सिर फट गया... और मैं स्तब्ध रह गई। मृत्यु को सामने देखते हुए, उस भयावह अंत की साक्षी बनकर, होश खो चुकी मैं यांत्रिक-सी उनसे विनती करने लगी कि मुझे भी मार डालें। लेकिन उन दरिंदों ने मेरी जान बख्श दी। आसपास की सारी समझ खोकर एक पागल-सी बैठी रह गई। जब होश आया मैंने जो देखा...! मानो कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि हो - चारों ओर बिखरी हुई लाशें... कुछ क्षण पहले तक जो अपने प्रियजनों के साथ हँस-बोल रहे थे, वे कितनी जल्दी उनसे हमेशा के लिए बिछड़ गए...!

जीवन का हर पल खुशी से जीने आए लोगों को मौत के मुहाने पर खड़ा करके, उनके अपनों को उनकी आँखों के सामने मारते हुए, उनकी जान की कोई कीमत न समझते हुए, उन दरिंदों ने निर्ममता से हत्या कर दी। धर्म और जाति के नाम पर उन्होंने पलक झपकते ही 26 निर्दोष लोगों की जान ले ली। साधारण लोगों को उनके धार्मिक विश्वासों के नाम पर भड़काकर आतंकवादी बनाने वाले... जिनके भीतर इंसानियत और अच्छाई का नामोनिशान तक नहीं था...दो नेकदिल युवकों को भी नहीं बख्शा गया, जिन्होंने बंदियों को छोडने की विनती की। माथे और सिर के पीछे गोली मारकर उन्हें भी निर्ममता से मार डाला।

पिता को खो चुके बच्चों की चीखें... जो लोग खुशियाँ मनाने आए थे, वे अब अपनों के शवों से लिपटकर बैठे थे। साथ में यात्रा करके, अकेले लौटने को मजबूर लोगों की हृदयविदारक तस्वीरें...!!! जीवन के रंगों और सपनों को संजोकर यात्रा शुरू करने वाले वे नवयुवक जोड़े... सब कुछ खोकर, अपने जीवनसाथी के निर्जीव शरीर को गले लगाकर निस्पंद बैठे हुए - यह दृश्य आँखों को नम कर देने वाला बन गया।

कुछ भी करने में असमर्थ, किसी को सांत्वना देने में अक्षम, हम सब बस टूटकर रह गए थे। इतने सारे सपनों के साथ शुरू हुई यह यात्रा इस तरह समाप्त हो जाएगी - ऐसा हमने कभी सोचा भी नहीं था। जिसने मुझे अपने सीने से लगाकर मंगलसूत्र पहनाया था, वे हाथ अब कभी मुझे अपनी बाँहों में भरकर सुला नहीं पाएँगे - इस सच्चाई को मैंने एक झटके और गहरी शून्यता के साथ महसूस किया। मेरी टूटी हुई मानसिक स्थिति में जो शब्द जन्म ले रहे थे, उनका अनुमान लगाना भी आपके लिए संभव नहीं होगा।

धर्म के नाम पर निर्दोष लोगों की इस तरह निर्मम और पैशाचिक हत्या...जो लोग रिश्तों और अपनापन का अर्थ तक नहीं जानते, वे जीवन की भीख माँगने वालों को बंदूक की नोक पर खड़ा करके उनकी जान ले लेते हैं...जो लोग कई वर्षों तक साथ जीने वाले थे, वे मेरी आँखों के सामने तड़प-तड़प कर खून से लथपथ होकर बिखर गए - और मैं बस असहाय होकर यह सब देखती रह गई...!

न जाने कितनी ज़िंदगियों को इस तरह अकेला कर दिया गया... कितनी स्त्रियों की माँग का सिंदूर मिटा दिया गया... कितनी जिंदा लाशें हमारी आँखों को नम कर जाती हैं...मैं, जो एक नई जिंदगी की शुरुआत करने खुशी-खुशी निकली थी, आज उसी कमरे में अकेलेपन के दर्द के साथ बैठी हूँ... इस उम्मीद में कि शायद मेरे मही लौट आएँगे... मरते दम तक, उनके साथ बिताए कुछ अनमोल यादों को सँजोए, इस यात्रा के अंत का बोझ उठाए, टूटे हुए सपनों के दुख में डूबी, उस यात्रा को कोसते हुए जिसने मेरे जीवन को एक शून्यता में बदल दिया...अगर अगला जन्म हुआ, तो मैं बस यही चाहूँगी कि मेरे मही के साथ वह अधूरी रह गई जिंदगी फिर से जी सकूँ.....

और यह भी कि जिस भयावह क्षण ने मेरी खुशियाँ छीन लीं, वह इस दुनिया की किसी भी स्त्री के जीवन में कभी न आए...जब तक मेरी साँसें चलती रहेंगी, मैं उनकी यादों को संजोए इस धरती पर प्रतीक्षा करती रहूँगी...टूटे हुए दिल की पीड़ा के साथ, नम आँखों और काँपते होंठों से - मही... आपको मेरे दिल से सलाम...!!!!!! मेरे जीवन का साथी, जिसने मुझे अपने सीने से लगाया था, अब कभी वापस नहीं आएगा—यह सच्चाई मैं स्वीकार नहीं कर पा रही थी।

आज मैं अकेली हूँ... उसी कमरे में बैठी हूँ... इस उम्मीद में कि शायद वह लौट आए... अगर अगला जन्म हुआ, तो मैं फिर उनके साथ अधूरी रह गई जिंदगी जीना चाहती हूँ। और यह भी चाहती हूँ कि ऐसी भयावह घटना किसी और स्त्री के जीवन में कभी न आए। जब तक साँस है, उनकी यादों के सहारे मैं जीती रहूँगी...आँखों में आँसू और टूटे दिल के साथ...महियेट्टन... आपको मेरा एक बड़ा सलाम...!!!

दार्जिलिंग फ़ाइल
एक सरकारी दस्तावेज़ की कंचनजंगा यात्रा

श्री रविंदर कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बुनियादी ढाँचा और परिधीय कनेक्टिविटी मंत्रालय (MIPC) में एक अधिकारी, एक बक्सा और एक ज़रूरी हस्ताक्षर की तलाश की कहानी।

बुनियादी ढाँचा और परिधीय कनेक्टिविटी मंत्रालय (MIPC) दिल्ली के सरकारी गलियारों में एक सोए हुए दैत्य जैसा था। यह एक विशाल, फैली हुई इमारत में स्थित था जहाँ बासी चाय और पुराने काग़ज़ की महक हमेशा घुली रहती थी और MIPC मानसून में एक आलसी की गति से चलता था। केवल सीलिंग फ़ैन ही थे जो सचमुच तेज़ चलते थे, जो नमी को हराने की एक निरर्थक कोशिश में हमेशा "चक्रवात" पर सेट रहते थे।

यहीं पर सेक्शन ऑफिसर आरती शर्मा, तीस साल की, नई पैनी हुई HB पेंसिल जितनी तेज़ और लोक नीति में स्नातकोत्तर डिग्री से लैस, अपनी रोज़मर्रा की जंग लड़ती थीं। उनका युद्धक्षेत्र विशाल, भूलभुलैया जैसा दूसरी मंज़िल था, और उनका वर्तमान दुश्मन समय था, जो फ़ाइल संख्या MIPC/4/DBP/2024 के रूप में छिपा हुआ था। यह फ़ाइल, मोटी और महत्व के कारण पीली पड़ चुकी, दार्जिलिंग ब्रिज प्रोजेक्ट के लिए अंतिम फंडिंग आवंटन से संबंधित थी - कनेक्टिविटी का एक छोटा, महत्वपूर्ण टुकड़ा जिसके लिए शुक्रवार सुबह 11:00 बजे तक संयुक्त सचिव (JS) वी. के. शर्मा के तत्काल, गैर-परक्राम्य हस्ताक्षर की आवश्यकता थी। यदि हस्ताक्षर देर से होता, तो राज्य बजट विंडो बंद हो जाती, और परियोजना नौ महीने के लिए टल जाती।

मंगलवार का दिन था। फ़ाइल ग़ायब थी।

"सुरेश बाबू," आरती ने अपने सामने बैठे अपर डिवीजन क्लर्क (UDC) को संबोधित किया, वह व्यक्ति जिसने दिल्ली में बिजली कटौती से ज़्यादा फ़ाइलें देखी थीं। सुरेश बाबू, एक ऐसे व्यक्ति जिनकी आधिकारिक सेवानिवृत्ति की तारीख़ अक्सर चर्चा में रहती थी लेकिन कभी नहीं आती थी, इस समय एक करीने से इस्त्री किए हुए रूमाल के कोने से अपना चश्मा साफ़ कर रहे थे।

"हाँ, मैडम?" उन्होंने अपनी आवाज़ में धीमा, अभ्यस्त खिंचाव लाते हुए जवाब दिया।

“DBP फ़ाइल। कहाँ है वह? यह चार दिन पहले उप सचिव की मेज से चली गई थी। इसे अंतिम मंजूरी के लिए संयुक्त सचिव के पास होना चाहिए।”

सुरेश बाबू ने अपना चश्मा पोंछना बंद कर दिया। "आह, दार्जिलिंग फ़ाइल। यह ग़ायब नहीं है, मैडम। यह केवल अपने पल का इंतज़ार कर रही है।"

“सुरेश बाबू, यह पेड़ पर पकता हुआ आम नहीं है। यह एक सरकारी दस्तावेज़ है। इस पर हस्ताक्षर होने चाहिए ! JS साहब आज सुबह अपनी चार दिवसीय 'ध्यान रिट्रीट' के लिए निकल गए हैं और वह तब तक किसी चीज़ पर हस्ताक्षर नहीं करते जब तक कि भौतिक फ़ाइल उनकी मेज पर न हो।”

सुरेश बाबू और क़रीब आए, रहस्यमय ढंग से अपनी आवाज़ धीमी करते हुए - "संयुक्त सचिव, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें, किसी फ़ाइल के प्राण पर तब तक भरोसा नहीं करते जब तक कि वह उसका वज़न महसूस न करें । डिजिटल प्रतियाँ अख़बारों के लिए होती हैं, मैडम । एक सरकारी फ़ाइल की आत्मा होती है और उस आत्मा को शारीरिक रूप से स्थानांतरित किया जाना चाहिए।"

डिजिटल चक्कर

आरती ने आह भरी, मन ही मन पुल की लागत बनाम विलंबित हस्ताक्षर की लागत की गणना की । सिस्टम को स्थायित्व के लिए डिज़ाइन किया गया था, गति के लिए नहीं । उसने अपना पसंदीदा हथियार निकाला: आधुनिक नौकरशाही के घेराबंदी बुर्ज के बराबर – ईमेल । उन्होंने संयुक्त सचिव शर्मा को एक विनम्र लेकिन दृढ़ ईमेल लिखा, जिसमें अंतिम नोट-शीट की पीडीएफ संलग्न की और दूर से हस्ताक्षर करने के लिए आंतरिक ई-ऑफिस सिस्टम का लिंक दिया । उन्होंने इसे बोल्ड लाल अक्षरों में अति आवश्यक (URGENT) चिह्नित किया ।

कुछ सेकंड बाद, उनका फ़ोन बज उठा । यह संयुक्त सचिव थे ।

"आरती बेटा," आवाज़ आई, जो हल्की-फुल्की हवा और शायद बच्चों के ख़ुशगवार शोर से थोड़ी दब गई थी । "मैं तत्परता की सराहना करता हूँ । मैं इस समय पहाड़ की हवा में साँस ले रहा हूँ । मुझे बताओ, क्या तुम किसी डॉक्टर का नुस्ख़ा डाक से भेजती हो? या शादी का निमंत्रण फ़ैक्स से ?"

आरती ने स्पष्ट, आधुनिक जवाब को रोक लिया । "नहीं, सर ।"

"फिर यह... डिजिटल अनुलग्नक क्यों? फ़ाइल, मिस आरती, शरीर है, और हस्ताक्षर, आत्मा । उन्हें मिलना होगा । साथ ही, मेरा ई-ऑफिस पासवर्ड आज आधी रात को समाप्त हो रहा है, और मैं इसे रीसेट करने के लिए बहुत ज़्यादा आराम कर रहा हूँ । काग़ज़ लाओ ।" काग़ज़ लाओ ।

"सर, फ़ाइल कहाँ है ? यह आपकी बाहरी मेज पर नहीं है, और आपके पीए का कहना है कि उन्होंने इसे सोमवार से नहीं देखा है ।"

एक हल्का विराम, एक दूर की, मधुर घंटी की आवाज़ से भरा हुआ ।

"आह ! मुझे अब याद आया। मैंने इसे वातावरण में बदलाव देने का फ़ैसला किया । यह उस व्यक्ति के पास है जो काग़ज़ का वज़न समझता है । उस व्यक्ति को ढूँढो, और तुम्हें फ़ाइल मिल जाएगी ।" लाइन कट गई ।

आरती ने अपने फ़ोन को घूरा । काग़ज़ का वज़न ? उसने सुरेश बाबू की ओर रुख किया, जो स्पष्ट रूप से एक आनंदित, जानते हुए मुस्कुरा रहे थे । "ठीक है, बाबू । इसे डिकोड करें । 'वह जो काग़ज़ का वज़न समझता है ।'

सुरेश बाबू ने अपनी ठोड़ी सहलाई, आँखें दूर थीं, मानो किसी प्राचीन वैदिक श्लोक को याद कर रहे हों । "आह, वज़न । बोझ । भारी ज़िम्मेदारी ।" उन्होंने उँगलियाँ चटकाईं । "यह गणेशजी के पास है ।"

गणेशजी कोई देवता नहीं थे, बल्कि संयुक्त सचिव के निजी, प्राचीन और अत्यधिक शक्तिशाली कार्यालय चपरासी थे, जो आधिकारिक तौर पर किसी भी चीज़ के प्रभारी नहीं थे सिवाय संयुक्त सचिव के व्यक्तिगत सामान की सुरक्षा और ऐसी चाय बनाने के जिसका स्वाद बिल्कुल 1990 के दशक जैसा था ।

उन्होंने गणेशजी को बाहर एक मुरझाए हुए गमले में पानी डालते हुए देखा ।

"गणेशजी, दार्जिलिंग फ़ाइल? संयुक्त सचिव कहते हैं कि वह आपके पास है ।"

गणेशजी सीधे खड़े हुए, उनका चेहरा अगोचर था। "मैडम, JS साहब ने मुझे एक बक्सा सौंपा था। एक धातु का बक्सा। उन्होंने कहा था कि यह 'ऊष्मायन' के लिए है, और तभी निकाला जाना चाहिए जब पहाड़ की हवा में साँस ली जाए।" वह उन्हें वापस अंदर ले गए, ख़ामोश क्यूबिकल्स से होते हुए, संयुक्त सचिव के आंतरिक गर्भगृह तक। गणेशजी ने संयुक्त सचिव की ताला लगी अलमारी नहीं खोली। इसके बजाय, वह मेज के नीचे पहुँचे, और एक छोटा, पुराने ज़माने का, चमकीला स्टील का टिफ़िन डब्बा (लंचबॉक्स), तीन टियर वाला, बाहर निकाला।

"यह यहाँ है," गणेशजी ने ढक्कन उठाते हुए फुसफुसाया।

सबसे नीचे वाले टियर के अंदर, कपास ऊन की परतों के बीच एक अवशेष की तरह आराम फ़रमा रही थी, फ़ाइल संख्या MIPC/4/DBP/2024 थी।

"वह अपनी सबसे महत्वपूर्ण फ़ाइलें एक लंचबॉक्स में रखते हैं ?" आरती ने अविश्वास से पूछा।

"एक टिफ़िन बॉक्स चीज़ों को ताज़ा रखता है, मैडम," सुरेश बाबू ने दयालुता से समझाया। "यह सुनिश्चित करता है कि काग़ज़ सूख न जाए। JS साहब कहते हैं कि एक फ़ाइल को, भोजन की तरह, उपभोग से पहले ऊष्मायन की आवश्यकता है।"

समय के ख़िलाफ़ दौड़

फ़ाइल ढूँढना केवल पहली लड़ाई थी। अब असली चुनौती आई: भौतिक फ़ाइल को दिल्ली से दार्जिलिंग (1,500 किलोमीटर से अधिक) तक ले जाना, ताकि शुक्रवार को सुबह 11 बजे से पहले संयुक्त सचिव के हस्ताक्षर हो सकें।

आरती ने हर प्रीमियम कूरियर सेवा से संपर्क किया। "मैम, दार्जिलिंग तक अगले दिन डिलीवरी असंभव है। इसे पहले सिलीगुड़ी से गुज़रना होगा। सबसे अच्छा अनुमान शनिवार दोपहर का है।"

उन्होंने रेलवे पार्सल सेवाओं को देखा। बहुत धीमा, बहुत अविश्वसनीय। यह फ़ाइल शादी के उपहारों और फालतू मशीनरी के पुर्ज़ों के ढेर में खोने के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी।

"इसके लिए इंडियन नेटवर्क एक्सप्रेस, मैडम की ज़रूरत है," सुरेश बाबू ने अपना चश्मा ठीक करते हुए घोषणा की। "व्यक्तिगत एहसान का नेटवर्क। यह मंत्रालय से भी पुराना है।"

उन्होंने अपना मोटा, पुराना नोकिया फ़ोन निकाला, जिसकी बैटरी कभी नहीं मरती थी, और डायल करना शुरू कर दिया।

चरण 1: दिल्ली-कोलकाता रिले (रात की दौड़)

सुरेश बाबू न केवल MIPC में, बल्कि सरकारी कार्यकर्ताओं के विशाल, अंतर-जुड़े हुए पारिस्थितिकी तंत्र में भी एक किंवदंती थे। उन्होंने अपना पहला संपर्क ढूँढा: उनके चचेरे भाई का भतीजा, सुभाष, 12304 पूर्वा एक्सप्रेस पर एक यात्रा टिकट परीक्षक (TTE), जो उस शाम नई दिल्ली से निकलने वाली थी।

आरती ने फ़ाइल को पैक किया। आधिकारिक लिफ़ाफ़े में नहीं - बहुत संदिग्ध, बहुत ज़्यादा काग़ज़ात - बल्कि एक प्रसिद्ध चाँदनी चौक की दुकान से उच्च गुणवत्ता वाले मोतीचूर के लड्डू के एक बड़े, महँगे दिखने वाले बक्से के अंदर। फ़ाइल को मिठाई के बक्से के निचले तले के नीचे सुरक्षित रूप से टेप किया गया था।

शाम 7 बजे, आरती और सुरेश बाबू, अफ़रा-तफ़री और भाप के बीच, नई दिल्ली प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े थे। वे सुभाष से मिले, एक साफ़ TTE की वर्दी में एक सख़्त दिखने वाला आदमी।"फ़ाइल को कल सुबह तक हावड़ा पहुँचना चाहिए, सुभाष," सुरेश बाबू ने गंभीर रूप से निर्देश दिया, उसे मिठाई का बक्सा सौंपते हुए। "यह राष्ट्रीय कनेक्टिविटी का

मामला है, जो चीनी की परत के नीचे छिपा हुआ है।"

सुभाष ने सिर हिलाया, उपहार के रूप में छिपे एक केंद्रीय सरकारी अनुरोध की गंभीरता को समझते हुए। "यह सोने से भी ज़्यादा सुरक्षित है, मामा। यह TTE के केबिन में, आपातकालीन ब्रेक कॉर्ड के बगल में सवारी करेगा।"

चरण 2: कोलकाता-सिलीगुड़ी हैंडओवर (भोर की यात्रा)

पूर्वा एक्सप्रेस बुधवार को सुबह 7 बजे से ठीक पहले हावड़ा पहुँची। सुभाष ने, अपने वादे के अनुसार, लड्डू-फ़ाइल बक्सा रंजीत नाम के एक बहुत ही घबराए हुए युवक को सौंप दिया, जो सुरेश बाबू का एक दूर का पारिवारिक संपर्क था और सिलीगुड़ी में एक छोटा चाय का व्यवसाय चलाता था। रंजीत तुरंत सिलीगुड़ी के लिए एक स्थानीय ट्रेन पकड़ ली। फ़ाइल अब आगे बढ़ रही थी, लेकिन शुक्रवार की समय सीमा मंडरा रही थी।

चरण 3: सिलीगुड़ी-दार्जिलिंग चढ़ाई (अंतिम चढ़ाई)

गुरुवार दोपहर तक, फ़ाइल सिलीगुड़ी पहुँच गई। आरती सुरेश बाबू द्वारा भेजे गए गूढ़, एक-पंक्ति वाले अपडेट के माध्यम से इसकी प्रगति को ट्रैक कर रही थी: "लड्डू बक्सा जलपाईगुड़ी में सुरक्षित है।"

अब अंतिम, खतरनाक चरण आया: दार्जिलिंग तक घुमावदार, अक्सर कोहरे से ढकी सड़कों पर चढ़ाई।

संयुक्त सचिव वेधशाला हिल के पास एक हेरिटेज होटल में ठहरे हुए थे। कोई भी आधिकारिक कार समय पर यात्रा नहीं कर सकती थी, और व्यावसायिक परिवहन बहुत जोखिम भरा था।

सुरेश बाबू ने अपना अंतिम संपर्क ढूँढा: एक सेवानिवृत्त सेना ड्राइवर, कर्नल शर्मा (संयुक्त सचिव से कोई संबंध नहीं), जो अब पर्यटकों के लिए एक निजी, उच्च-ऊँचाई वाली टैक्सी सेवा चलाते थे।

"उन्हें आपातकालीन दौड़ के लिए एक एहसान, एक महत्वपूर्ण एहसान चाहिए," सुरेश बाबू ने आरती को बताया।

"नाम बताओ," आरती ने अपने कार्यालय में चहलकदमी करते हुए कहा, इस बात से अनजान कि उनके जूनियर सहयोगी इस नाटक को उत्सुकता से देख रहे थे, यह महसूस करते हुए कि यह किसी भी वेब सीरीज़ से ज़्यादा रोमांचक था।

एहसान सरल था: कर्नल शर्मा अगले महीने दिल्ली में एक पेंशन समारोह आयोजित कर रहे थे और उन्हें शुक्रवार शाम तक ठीक पचास नए, उच्च-गुणवत्ता वाले MIPC-ब्रांडेड लेटर पैड की आवश्यकता थी।

"हो गया," आरती ने घोषणा की, स्टेशनरी सेक्शन को जुटाते हुए, एक ऐसी जगह जहाँ आमतौर पर एक सिंगल पेन प्राप्त करने के लिए एक महीने के फ़ॉर्म की आवश्यकता होती थी। गुरुवार शाम 4 बजे तक, पचास कुरकुरे लेटर पैड तैयार थे, दिल्ली में कर्नल के संपर्क का इंतज़ार कर रहे थे।गुरुवार शाम 5 बजे, कर्नल की मज़बूत, ऑल-व्हील-ड्राइव टैक्सी, लड्डू-फ़ाइल बक्से को लेकर, हिमालयी धुंध की ओर धीमी, घुमावदार चढ़ाई शुरू कर दी।

सिस्टम का हस्ताक्षर

शुक्रवार, सुबह 10:45 बजे।

आरती अपनी कंप्यूटर स्क्रीन को घूर रही थी, घड़ी सेकंड टिक कर रही थी। उसने वह सब कुछ कर दिया था जो मानवीय रूप से संभव था। फ़ाइल कहीं एक कोहरे वाली पहाड़ी सड़क पर थी, जिसे

एक सेवानिवृत्त कर्नल चला रहे थे, यह सब एक UDC, एक TTE, एक चाय व्यापारी, और पचास लेटर पैड की बदौलत।

फिर, उसका फ़ोन बजा। यह संयुक्त सचिव वी.के. शर्मा थे। पृष्ठभूमि का शोर अब हवा नहीं थी; यह एक होटल की नाश्ते की ट्रॉली का हल्का खड़खड़ाना था।

"मिस आरती," संयुक्त सचिव की आवाज़ गर्म थी। "मुझे पैकेज मिल गया है। लड्डू उत्कृष्ट हैं। मोतीचूर किस्म के लिए मेरी प्राथमिकता याद रखने के लिए कृपया सुरेश बाबू को धन्यवाद दें।" आरती ने अपने गले में आए गोले को निगल लिया। "सर। फ़ाइल।"

"आह, हाँ, दार्जिलिंग फ़ाइल। मैं इसे अभी पकड़े हुए हूँ। यह बिल्कुल तब पहुँची जब कंचनजंगा की चोटी कोहरे से बाहर निकली। एक अच्छा शगुन, निश्चित रूप से।"

वह एक पल के लिए चुप हो गए। आरती ने उनकी कल्पना की, एक लकड़ी की बेंच पर बैठे हुए, सूरज अंततः हिमालयी ठंड को तोड़ रहा था, weighty, पीली पड़ चुकी फ़ाइल उनकी गोद में खुली हुई थी।

"पुल दो ज़िलों को जोड़ेगा, मिस आरती। यह हज़ारों लोगों के लिए यात्रा के समय को कम करेगा। काग़ज़ का यह टुकड़ा," उन्होंने फ़ाइल पर टैप किया, "केवल एक आवंटन नहीं है। यह एक वादा है। और एक वादे को, काग़ज़ की तरह, सावधानी से संभालना चाहिए।"आरती ने उनके हस्ताक्षर की लयबद्ध खरोंच सुनी। वी.के. शर्मा, संयुक्त सचिव।

"भौतिक फ़ाइल पर अब हस्ताक्षर हो गए हैं," संयुक्त सचिव ने आगे कहा। "मैं हस्ताक्षरित नोट-शीट की एक तस्वीर आपके आधिकारिक ईमेल पर भेज रहा हूँ, जिसे आप तुरंत राज्य समन्वय प्रकोष्ठ को अग्रेषित कर सकती हैं।"आरती विडंबना को घूरने लगी। काग़ज़ के एक टुकड़े के लिए एक हज़ार मील की यात्रा, केवल अंतिम, महत्वपूर्ण प्रमाण – हस्ताक्षर - को एक कम-रिज़ॉल्यूशन वाले Jpeg के माध्यम से वापस भेजे जाने के लिए।

"धन्यवाद, सर," वह किसी तरह बोल पाई।

"पुल खड़ा रहेगा, मिस आरती," उन्होंने निष्कर्ष निकाला, उनकी आवाज़ में गहरे संतोष का भाव था। "लेकिन याद रखें, यात्रा हमेशा अनुमोदन प्रक्रिया का हिस्सा होती है।"

उपसंहार: फ़ाइल की आत्मा

सुबह 11:05 बजे तक, राज्य समन्वय प्रकोष्ठ के पास स्कैन किए गए हस्ताक्षर थे। बजट विंडो को पूरा कर लिया गया। दार्जिलिंग ब्रिज प्रोजेक्ट को हरी झंडी मिल गई।

सोमवार को, संयुक्त सचिव लौट आए, तरोताज़ा और कोहरे और पहाड़ों की कहानियों से भरे हुए। मूल, हस्ताक्षरित फ़ाइल उसी सप्ताह बाद में एक सुरक्षित आधिकारिक कूरियर के माध्यम से वापस आ गई, अपनी अजीबोगरीब गोल यात्रा को पूरा करते हुए।

आरती ने एक मूल्यवान सबक सीखा। सरकारी प्रणाली केवल दक्षता मेट्रिक्स और डिजिटल गति के बारे में नहीं थी; यह एक जटिल, मानवीय पारिस्थितिकी तंत्र था। यह दशकों से निर्मित भरोसे, एहसानों, पाले गए संपर्कों, और आधिकारिक काग़ज़ - काग़ज़ - के लिए एक गहरा, लगभग आध्यात्मिक सम्मान के बारे में था।और सुरेश बाबू, वह व्यक्ति जो एक फ़ाइल के प्राण को समझता था, बस मुस्कुराए जब उन्होंने अपने नए अधिग्रहित, MIPC-ब्रांडेड लेटर पैड पर एक अतिरिक्त-मज़बूत ग्लू स्टिक लगाते हुए आरती को देखा।

"फ़ाइल हमेशा अपना रास्ता ढूँढ लेती है, मैडम," उन्होंने ऊपर न देखते हुए कहा। "कभी-कभी, इसे बस पहाड़ों को देखने के लिए थोड़ा चक्कर लगाना पड़ता है।"

सुश्री नीनु एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हर इंसान के जीवन में सपनों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है । सपने ही हमें आगे बढ़ने और अपने जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हैं । यदि जीवन में सपने न हों, तो जीवन नीरस और उद्देश्यहीन हो जाता है । सपने हमारे विचारों को दिशा देते हैं और हमें अपने लक्ष्य की ओर मेहनत करने के लिए प्रेरित करते हैं ।

सपने देखना आसान होता है, लेकिन उन्हें साकार करना उतना ही कठिन होता है । इसके लिए निरंतर परिश्रम, धैर्य, आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है । कई बार ऐसा होता है कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते समय हमें असफलताओं का सामना करना पड़ता है । कुछ लोग हमारा मज़ाक उड़ाते हैं या हमें हतोत्साहित करने की कोशिश करते हैं । लेकिन जो व्यक्ति अपने सपनों पर विश्वास रखता है, वह इन कठिनाइयों से घबराता नहीं है । वह हर असफलता से सीखता है और अपने प्रयासों को और मजबूत बनाता है ।

हर व्यक्ति अपने जीवन में कोई न कोई सपना देखता है । कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई शिक्षक बनना चाहता है और कोई वैज्ञानिक बनना चाहता है । ये सपने ही हमारे जीवन को एक लक्ष्य देते हैं और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं । जब हम अपने सपनों को पूरा करने के लिए लगातार प्रयास करते हैं, तब धीरे-धीरे वे वास्तविकता में बदलने लगते हैं ।

मनुष्य का जीवन केवल दिनचर्या तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह सपनों, इच्छाओं और उम्मीदों से भरी एक सुंदर यात्रा है । यही सपने जीवन को अर्थ देते हैं। जब इन सपनों को मेहनत, आत्मविश्वास और साहस का साथ मिलता है, तब वे “सपनों के पंख” बन जाते हैं, जो हमें जीवन की नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं ।

सपनों को साकार करने के लिए केवल कल्पना पर्याप्त नहीं होती । इसके लिए कठोर परिश्रम और निरंतर प्रयास आवश्यक होते हैं । जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरी

निष्ठा से मेहनत करता है, तब उसके सपनों को सच में पंख मिलते हैं।

सपनों को पंख देने के लिए तीन महत्वपूर्ण तत्व आवश्यक होते हैं- मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास। मेहनत हमें लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाती है, धैर्य कठिन समय में टिके रहने की शक्ति देता है और आत्मविश्वास हमें यह विश्वास दिलाता है कि हम अपने सपनों को अवश्य पूरा कर सकते हैं।

सपनों की राह कभी आसान नहीं होती। इस रास्ते में कई बाधाएँ और चुनौतियाँ आती हैं। कभी परिस्थितियाँ कठिन हो जाती हैं, कभी संसाधनों की कमी होती है और कभी समाज या परिवार की अपेक्षाएँ भी दबाव बनाती हैं। लेकिन जो लोग अपने सपनों के प्रति सच्चे होते हैं, वे इन चुनौतियों से डरते नहीं हैं। वे हर समस्या को एक अवसर की तरह देखते हैं और उससे सीखकर आगे बढ़ते हैं।

युवा अवस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस समय व्यक्ति के पास ऊर्जा, उत्साह और नए विचार होते हैं। यही वह समय होता है जब व्यक्ति अपने सपनों को पहचान सकता है और उन्हें सही दिशा दे सकता है। यदि युवा अपने सपनों को ईमानदारी और मेहनत के साथ पूरा करने का प्रयास करें, तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बना सकते हैं बल्कि समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

सपनों को पंख देने में सकारात्मक सोच की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है। सकारात्मक दृष्टिकोण हमें कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की शक्ति देता है। यह हमें सिखाता है कि असफलता अंत नहीं है, बल्कि सफलता की ओर बढ़ने का एक कदम है।

दुनिया के कई महान व्यक्तियों ने अपने सपनों को सच करके इतिहास रचा है। विज्ञान, कला, साहित्य और खेल के क्षेत्र में जितनी भी बड़ी उपलब्धियाँ हुई हैं, वे सब कभी किसी के सपने ही थे। इन सपनों ने ही मानव सभ्यता को आगे बढ़ाया है और नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि "सपनों के पंख" जीवन की उस शक्ति का प्रतीक हैं जो हमें आगे बढ़ने और नई ऊँचाइयों तक पहुँचने की प्रेरणा देती है। हर व्यक्ति के भीतर सपनों का एक विशाल संसार छिपा होता है। आवश्यकता केवल उन्हें पहचानने, उन पर विश्वास करने और उन्हें पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करने की है।

जब हम अपने सपनों को मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास का सहारा देते हैं, तब वे सच में पंख बन जाते हैं—ऐसे पंख जो हमें जीवन के खुले आकाश में ऊँची और सुंदर उड़ान भरने की शक्ति देते हैं। इसलिए हमें कभी भी सपने देखना नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि जब सपनों को पंख मिलते हैं, तब जीवन की सबसे सुंदर उड़ान शुरू होती है। इस प्रकार "सपनों के पंख" हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। यदि हमारे भीतर विश्वास, मेहनत और साहस है, तो हम अपने सपनों को सच करके जीवन को सफल और अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

व्यावसायिक नैतिकता : लोक सेवा, नेतृत्व और सुशासन का मूल आधार

श्री गोपेश कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भूमिका

किसी भी समाज की प्रगति केवल उसकी आर्थिक वृद्धि, तकनीकी विकास या भौतिक उपलब्धियों से नहीं आँकी जा सकती। किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके संस्थानों की विश्वसनीयता, उसके प्रशासन की निष्पक्षता और उसके नेतृत्व के नैतिक चरित्र में निहित होती है। इन्हीं तत्वों को जोड़ने वाला केंद्रीय सूत्र है — व्यावसायिक नैतिकता (Professional Ethics)

व्यावसायिक नैतिकता का संबंध केवल व्यक्ति के निजी जीवन या व्यक्तिगत ईमानदारी से नहीं है, बल्कि यह उस समग्र आचरण से जुड़ी है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अपने पेशेगत दायित्वों का निर्वहन करता है। विशेष रूप से लोक सेवा में, जहाँ निर्णयों का प्रभाव करोड़ों नागरिकों, सार्वजनिक संसाधनों और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर पड़ता है, वहाँ व्यावसायिक नैतिकता एक वैकल्पिक गुण नहीं, बल्कि अनिवार्य शर्त बन जाती है।यह लेख व्यावसायिक नैतिकता की अवधारणा, उसके विभिन्न आयामों, उसके महत्व, चुनौतियों तथा हमारे राष्ट्रीय नेताओं के जीवन से प्राप्त प्रेरणादायक उदाहरणों के माध्यम से इस विषय का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

ईमानदारी

1. व्यावसायिक नैतिकता : अर्थ और अवधारणा

व्यावसायिक नैतिकता से आशय उन नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों और मानकों से है, जो किसी पेशे से जुड़े व्यक्तियों के आचरण, निर्णय और व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं। यह निर्धारित करती है कि कोई व्यक्ति न केवल क्या करे, बल्कि कैसे करे और क्यों करे।

सरल शब्दों में, व्यावसायिक नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि—

- → कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी से हो
- → निर्णय निष्पक्ष और तर्कसंगत हों
- → व्यक्तिगत लाभ के स्थान पर सार्वजनिक हित को प्राथमिकता दी जाए
- → शक्ति और अधिकारों का प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से हो

यह केवल नियमों का पालन भर नहीं है, बल्कि नियमों की भावना को समझकर कार्य करना भी व्यावसायिक नैतिकता का ही हिस्सा है।

2. व्यावसायिक नैतिकता का महत्व

(क) सार्वजनिक विश्वास की नींव

लोक सेवा का संपूर्ण ढाँचा जनता के विश्वास पर आधारित होता है। जब कोई अधिकारी सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और पारदर्शिता से कार्य करता है, तो जनता का यह विश्वास और सुदृढ़ होता है। इसके विपरीत, नैतिक पतन का एक भी उदाहरण पूरे संस्थान की छवि को प्रभावित कर सकता है। इतिहास गवाह है कि अनेक संस्थान नियमों के बावजूद इसलिए कमजोर पड़े क्योंकि उनमें नैतिक प्रतिबद्धता का अभाव था।

(ख) शक्ति के दुरुपयोग की रोकथाम

प्रशासनिक पदों के साथ निर्णय लेने की शक्ति जुड़ी होती है । व्यावसायिक नैतिकता वही आंतरिक नियंत्रण है जो इस शक्ति को मनमानी, पक्षपात या भ्रष्टाचार में बदलने से रोकती है । जहाँ बाहरी नियंत्रण विफल हो जाते हैं, वहाँ नैतिक विवेक अंतिम रक्षक बनता है ।

(ग) दीर्घकालिक सुशासन

नैतिकता पर आधारित प्रशासन तात्कालिक रूप से भले ही कठोर या असुविधाजनक लगे, परंतु दीर्घकाल में वही सुशासन को स्थायित्व प्रदान करता है । अल्पकालिक लाभ के लिए किए गए नैतिक समझौते अंततः संस्थागत क्षरण का कारण बनते हैं ।

3. व्यावसायिक नैतिकता के प्रमुख आयाम

(1) व्यक्तिगत नैतिकता

यह व्यक्ति की अंतरात्मा, आत्मानुशासन और मूल्यबोध से संबंधित होती है । कोई भी नियम हर परिस्थिति को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं कर सकता । ऐसे में व्यक्तिगत नैतिकता ही सही और गलत के बीच अंतर करने में मार्गदर्शक बनती है ।

एक ईमानदार अधिकारी वह होता है जो—

→ बिना निगरानी के भी सही कार्य करे
→ दबाव के सामने झुकने से इंकार करे
→ अपने निर्णयों की नैतिक जिम्मेदारी स्वयं उठाए

(2) संस्थागत नैतिकता

संस्थागत नैतिकता का संबंध संगठन की कार्य संस्कृति, आचार संहिता और नेतृत्व के उदाहरण से होता है । यदि कोई संस्था केवल नियम बनाती है, परंतु नैतिक आचरण को व्यवहार में प्रोत्साहित नहीं करती, तो वह नैतिकता को औपचारिकता तक सीमित कर देती है ।

नैतिक संस्थान वह होते हैं जहाँ—

→ पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाता है
→ गलतियों को छिपाने के बजाय सुधारा जाता है
→ ईमानदारी को कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति माना जाता है

(3) सार्वजनिक नैतिकता

लोक सेवक का व्यवहार केवल कार्यालय तक सीमित नहीं होता । उसका सार्वजनिक आचरण, भाषा, संयम और निर्णय संस्था की छवि को प्रभावित करते हैं । इसलिए निजी और सार्वजनिक जीवन में संतुलन और मर्यादा बनाए रखना व्यावसायिक नैतिकता का महत्वपूर्ण पक्ष है।

4. भारतीय संविधान और नैतिक लोक सेवा

भारतीय संविधान केवल विधिक दस्तावेज नहीं, बल्कि एक गहन नैतिक दर्शन भी है ।

(क) प्रस्तावना के मूल्य

संविधान की प्रस्तावना में निहित—

न्याय
स्वतंत्रता
समानता
बंधुत्व

ये सभी मूल्य प्रशासनिक नैतिकता की नींव रखते हैं । कोई भी लोक सेवक जब निष्पक्ष निर्णय लेता है, तब वह संविधान की आत्मा का पालन करता है ।

(ख) समानता और निष्पक्षता

अनुच्छेद 14 समानता और निष्पक्ष व्यवहार का सिद्धांत स्थापित करता है । प्रशासनिक निर्णयों में पक्षपात, भेदभाव या मनमानी न केवल कानूनी त्रुटि है, बल्कि नैतिक विफलता भी है ।

5. हमारे राष्ट्रीय नेताओं से नैतिक प्रेरणा

महात्मा गांधी : साधन और साध्य की शुद्धता

महात्मा गांधी का जीवन इस सिद्धांत का प्रतीक है कि—

साध्य की पवित्रता साधनों की पवित्रता से ही सुनिश्चित होती है।

लोक सेवा में यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है। यदि प्रक्रिया नैतिक नहीं है, तो परिणाम चाहे कितना भी आकर्षक क्यों न हो, वह टिकाऊ नहीं होता।

सरदार वल्लभभाई पटेल : कर्तव्य, अनुशासन और निर्भीकता

सरदार पटेल ने सिविल सेवकों से अपेक्षा की थी कि वे—

→ सत्ता से नहीं, संविधान से निष्ठा रखें
→ कठिन निर्णयों से न घबराएँ
→ राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानें

उनका नेतृत्व नैतिक साहस का उत्कृष्ट उदाहरण है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर : नैतिक विवेक और उत्तरदायित्व

डॉ. अंबेडकर का प्रसिद्ध कथन है—

"संविधान कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि उसे लागू करने वाले नैतिक नहीं होंगे, तो वह विफल हो जाएगा।"

यह कथन व्यावसायिक नैतिकता के महत्व को अत्यंत स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

लाल बहादुर शास्त्री : सादगी और ईमानदारी

प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी सादगीपूर्ण जीवन जीना यह दर्शाता है कि नैतिक नेतृत्व दिखावे से नहीं, आचरण से स्थापित होता है।

6. व्यावसायिक जीवन में नैतिक दुविधाएँ

व्यावसायिक जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब—
नियम स्पष्ट नहीं होते
दबाव अप्रत्यक्ष होता है
और निर्णय व्यक्तिगत जोखिम से जुड़े होते हैं

ऐसे समय में नैतिकता व्यक्ति से एक ही प्रश्न पूछती है —"क्या मैं इस निर्णय को सार्वजनिक रूप से सही ठहरा सकता हूँ ?"

7. नैतिकता और कार्य संस्कृति

जहाँ नैतिकता मजबूत होती है—
वहाँ भय के स्थान पर विश्वास होता है
वहाँ निगरानी के स्थान पर आत्मानुशासन होता है
वहाँ नियम बोझ नहीं, बल्कि मार्गदर्शक बनते हैं

नैतिक कार्य संस्कृति संस्थानों को जीवंत और टिकाऊ बनाती है।

8. नैतिकता का क्षरण : एक मौन संकट

नैतिकता का क्षरण अचानक नहीं होता। यह धीरे-धीरे होता है—
छोटे समझौतों से
सुविधाजनक चुप्पियों से
"सब ऐसा ही करते हैं" जैसी मानसिकता से

यही छोटे समझौते बड़े संस्थागत पतन की भूमिका तैयार करते हैं।

9. व्यावसायिक नैतिकता का संवर्धन

व्यावसायिक नैतिकता को सुदृढ़ करने के लिए—
नैतिक प्रशिक्षण को औपचारिकता न बनने दिया जाए

→ वरिष्ठ अधिकारी उदाहरण प्रस्तुत करें
→ पारदर्शिता और संवाद को बढ़ावा दिया जाए
→ नैतिक साहस को संरक्षण मिले
→ आत्ममंथन की संस्कृति विकसित की जाए

निष्कर्ष

व्यावसायिक नैतिकता कोई अतिरिक्त अपेक्षा नहीं, बल्कि लोक सेवा का प्राण है। यह वह अदृश्य शक्ति है जो—
संस्थानों को विश्वसनीय बनाती है
प्रशासन को मानवीय स्वरूप देती है
और लोकतंत्र को स्थायित्व प्रदान करती है

जब कोई लोक सेवक नैतिकता के साथ कार्य करता है, तब वह केवल अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करता, बल्कि अपने पद, अपनी संस्था और अपने राष्ट्र की गरिमा की रक्षा करता है।

यही व्यावसायिक नैतिकता का वास्तविक अर्थ, उद्देश्य और सार है।

कर्तव्य, त्याग और निर्भरता की मानसिकता :

आत्म-कल्याण तथा सक्षम समाज की ओर

सुश्री रुचिका,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय समाज का ताना-बाना कर्तव्य, त्याग और पारिवारिक उत्तरदायित्वों से बुना हुआ है। यहाँ जीवन को केवल व्यक्तिगत इच्छाओं का विस्तार नहीं माना गया, बल्कि संबंधों की एक ऐसी श्रृंखला के रूप में देखा गया है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी पर निर्भर है और साथ ही किसी न किसी की अपेक्षाओं का वाहक भी। इस व्यवस्था ने समाज को लंबे समय तक स्थिरता, निरंतरता और पारिवारिक एकता प्रदान की है। किंतु समय के साथ यह प्रश्न अधिक गहराता जा रहा है कि क्या अत्यधिक त्याग और निरंतर निर्भरता व्यक्ति, परिवार और अगली पीढ़ी—तीनों के लिए समान रूप से स्वस्थ और हितकारी है ?

त्याग की संस्कृति और उसका मनोवैज्ञानिक पक्ष

भारतीय जीवनशैली में त्याग को सद्गुण माना गया है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए, पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए और परिवार के सदस्य सामूहिक हित के लिए अपने व्यक्तिगत सुख, इच्छाओं और विश्राम को पीछे रखते आए हैं। यह त्याग जब स्वेच्छा से होता है, तब वह व्यक्ति को गरिमा, संतोष और आत्मसम्मान प्रदान करता है। परंतु जब यही त्याग सामाजिक अपेक्षा, पारिवारिक दबाव या नैतिक अनिवार्यता का रूप ले लेता है, तब वह धीरे-धीरे मानसिक बोझ में परिवर्तित हो जाता है। कई बार व्यक्ति स्वयं यह पहचान नहीं पाता कि वह जो कर रहा है, वह उसका सचेत चुनाव है या वर्षों से चली आ रही आदत। इसी बिंदु पर "कर्तव्य" और "आत्म-विस्मृति" के बीच की रेखा धुंधली होने लगती है। व्यक्ति अपने जीवन को निभाते-निभाते स्वयं को पीछे छोड़ देता है, और उसे यह भी आभास नहीं होता कि उसने कब अपनी खुशियों को अनावश्यक रूप से स्थगित कर दिया।

महिलाओं की भूमिका : दायित्व से पहचान तक

महिलाएँ पारंपरिक रूप से भारतीय परिवार की धुरी रही हैं। घर का संचालन, बच्चों का पालन-पोषण, बुज़ुर्गों की देखभाल और संबंधों का संतुलन-इन सबको उन्होंने अपने स्वाभाविक कर्तव्य के रूप में स्वीकार किया है। समस्या वहाँ उत्पन्न होती है, जहाँ यह कर्तव्य धीरे-धीरे उनकी संपूर्ण पहचान बन जाता है।

अक्सर महिलाएँ बच्चों और परिवार के लिए आवश्यकता से अधिक त्याग करती हैं—अपनी इच्छाओं, स्वास्थ्य, विश्राम, सामाजिक जीवन और आत्म-विकास को लगातार स्थगित करती रहती हैं। समय के साथ यह त्याग एक मौन अपेक्षा में बदल जाता है कि बच्चे बड़े होकर उसी समर्पण को लौटाएँ। यही अपेक्षा बच्चों पर अनकहा

मानसिक दबाव बन जाती है, जो उनके निर्णयों, आत्मविश्वास और स्वतंत्रता को प्रभावित करती है।

पुरुषों की भूमिका : जिम्मेदारी और आत्म-निषेध

पुरुषों की स्थिति इससे भिन्न नहीं है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे परिवार की आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य की स्थिरता का भार उठाएँ। इस भूमिका में वे भी अपनी थकान, भावनाओं, इच्छाओं और मानसिक स्वास्थ्य को पीछे रख देते हैं।

पुरुष का त्याग प्रायः "कर्तव्य" कहकर महिमामंडित किया जाता है, परंतु उसके भीतर पनप रही मानसिक थकान और आत्म-दबाव पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। इस प्रकार, पुरुष और महिला-दोनों ही अलग-अलग भूमिकाओं में बँधकर धीरे-धीरे स्वयं से दूर होते जाते हैं, ताकि दूसरों की अपेक्षाएँ पूरी कर सकें।

बच्चों पर निर्भरता की मानसिक अपेक्षा

समस्या केवल त्याग तक सीमित नहीं है; समस्या है निर्भरता की मानसिकता। कई माता-पिता अनजाने में अपने बच्चों पर भावनात्मक और व्यावहारिक निर्भरता विकसित कर लेते हैं। वे बच्चों के बड़े हो जाने के बावजूद उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने नहीं देते, क्योंकि भीतर कहीं यह भय होता है कि यदि बच्चे पूर्णतः सक्षम हो गए, तो माता-पिता की आवश्यकता और भूमिका कम हो जाएगी।
इसके परिणामस्वरूप—

- बच्चे निर्णय लेने में हिचकिचाते हैं,
- उनमें अपराधबोध विकसित होता है,
- वे अपने जीवन के चुनावों को माता-पिता की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालते हैं।

यह स्थिति बच्चों को न तो पूरी तरह आत्मनिर्भर बनने देती है और न ही मानसिक रूप से मुक्त।
अत्यधिक त्याग और उसकी प्रत्याशा का दुष्प्रभाव

जब माता-पिता अपने बच्चों के लिए आवश्यकता से अधिक त्याग करते हैं और फिर उसी त्याग की पुनरावृत्ति की अपेक्षा रखते हैं, तो यह संबंध प्रेम से अधिक लेन-देन जैसा हो जाता है। बच्चे यह महसूस करने लगते हैं कि उनका अस्तित्व केवल किसी का कर्ज चुकाने के लिए है।
यह मानसिक दबाव आगे चलकर—

- तनाव,
- निर्णय-भय,

और रिश्तों में दूरी का कारण बनता है। इस प्रक्रिया में न माता-पिता संतुष्ट रह पाते हैं, न बच्चे मानसिक रूप से स्वतंत्र बन पाते हैं।
एक और सोच जो समाज में पनप रही है, इस मानसिकता से जुड़ी है, जिसका वर्णन आगे किया गया है।

बीमारी बनाम खुशी के लिए अवकाश : एक सामाजिक विरोधाभास

भारतीय समाज में एक गहरी मानसिकता विकसित हो चुकी है। बीमारी के कारण लिया गया अवकाश सहज रूप से स्वीकार्य है, परंतु खुशी, आत्म-विश्राम या मानसिक शांति के लिए लिया गया अवकाश समाज को असहज करता है। मानो व्यक्ति को अपने लिए समय लेने का अधिकार तभी है, जब वह पूरी तरह असमर्थ हो जाए।

यदि कोई व्यक्ति कहे कि वह मानसिक थकान से उबरने के लिए कुछ दिन का अवकाश चाहता है, पहाड़ों पर जाना चाहता है, किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करना चाहता है या केवल स्वयं के साथ समय बिताना चाहता है, तो उसे

स्वार्थी समझा जाता है। यही व्यक्ति यदि बीमार पड़ जाए, तो वही समाज उसकी अनुपस्थिति को सहज रूप से स्वीकार कर लेता है। यह विरोधाभास दर्शाता है कि हमने स्वयं को यह अधिकार केवल बीमारी की अवस्था में दिया है, स्वस्थ रहते हुए नहीं। जबकि वास्तविकता यह है कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए भी अवकाश उतना ही आवश्यक है।

खुशी के लिए छुट्टी लेना स्वार्थ नहीं

खुद की खुशी के लिए छुट्टी लेना स्वार्थ नहीं है; यह आत्म-संरक्षण का एक आवश्यक रूप है। जीवन की निरंतर जिम्मेदारियों के बीच यदि व्यक्ति स्वयं को समय नहीं देगा, तो वह भीतर से रिक्त होता जाएगा। पहाड़ों पर जाना, प्रकृति के बीच कुछ दिन बिताना, धार्मिक स्थलों की यात्रा करना—इन सबका उद्देश्य किसी विशेष अनुभूति की अपेक्षा करना नहीं, बल्कि जीवन की गति से थोड़ी दूरी बनाना है। जब व्यक्ति स्वयं को यह अनुमति देता है, तभी वह अपने कर्तव्यों को भी बेहतर ढंग से निभा पाता है। एक थका हुआ और भीतर से असंतुष्ट व्यक्ति न परिवार को संतुलन दे सकता है, न समाज को।

निर्भरता से क्षमता की ओर

अब समय आ गया है कि हम जीवन के हर स्तर पर-

- छोटी से छोटी आवश्यकता,
- और बड़े से बड़े निर्णय के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की मानसिकता पर पुनर्विचार करें।

इसका अर्थ यह नहीं कि संबंध टूटें, बल्कि यह कि संबंध सक्षम व्यक्तियों के बीच हों, न कि निर्भर व्यक्तियों के बीच।

यदि हम अपने बच्चों को—

- आत्मनिर्भर बनना सिखाएँ,
- उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता दें,
- और उन्हें अपराधबोध से मुक्त रखें,

तो न वे हम पर अनावश्यक रूप से निर्भर होंगे, न ही हम उन पर।

निष्कर्ष

एक स्वस्थ समाज वही है जहाँ—

- पुरुष और महिला दोनों अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें,
- परंतु स्वयं को पूरी तरह खोए बिना।
- जहाँ माता-पिता बच्चों को बाँधने के बजाय सक्षम बनाएँ।
- और जहाँ त्याग प्रेम से उपजे, अपेक्षा से नहीं।

जीवन का उद्देश्य केवल दूसरों की ज़रूरतें पूरी करना नहीं, बल्कि स्वयं को पूर्ण रखते हुए दूसरों के साथ चलना है।

जब समाज यह स्वीकार कर लेगा कि खुद की खुशी के लिए लिया गया अवकाश स्वार्थ नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता है, तभी हम एक संतुलित, सक्षम और संवेदनशील समाज की ओर आगे बढ़ पाएँगे।

क्या हम AI बना रहे हैं, या AI हमें फिर से गढ़ रहा है ?

श्री अतुल कृष्णा डी
सुपुत्र श्री कृष्णकुमार वी जी, व.लेप.

यह मान लेना आसान है कि नियंत्रण हमारे हाथ में है।

यही कहानी हमें सबसे ज़्यादा पसंद आती है: इंसान कमान संभाले हुए हैं, और मशीनें हमारे पीछे आज्ञाकारी चल रही हैं। हम कोड लिखते हैं, डेटा देते हैं, एल्गोरिदम को आकार देते हैं। इस नज़रिए से, AI एक उन्नत औज़ार जैसा लगता है - बस काम करने का एक और बेहतर तरीका। यह हमारी बुद्धिमत्ता को दर्शाता है, हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाता है, और हमारी सीमाओं को आगे बढ़ाता है।

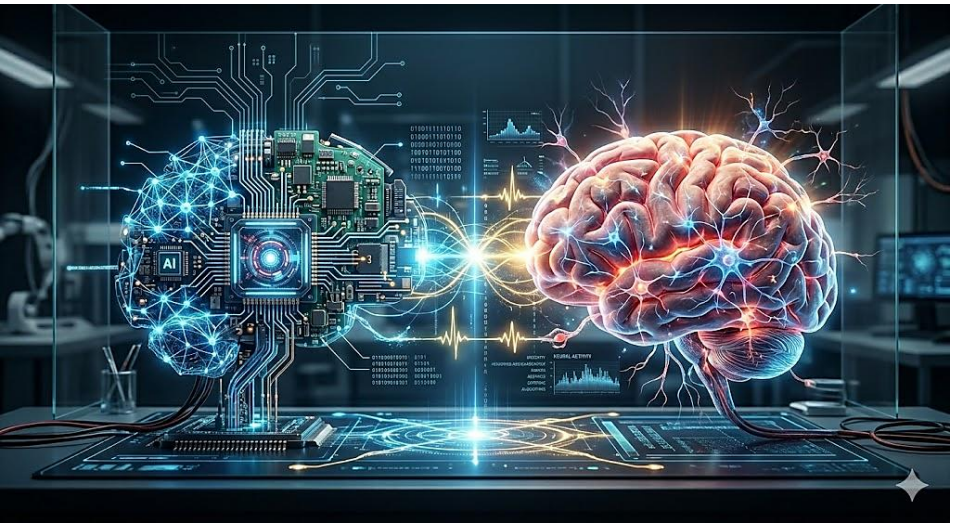

लेकिन इसके नीचे एक और कहानी छिपी हुई है । क्या होगा अगर यह अब एकतरफा रास्ता नहीं रहा ? क्या होगा अगर, जब हम AI बना रहे हैं, वह चुपचाप हमें भी बदल रहा है - हमारी दिनचर्या, हमारे विचार, यहाँ तक कि हम खुद को कैसे देखते हैं ?

आज का AI सिर्फ निर्देशों का इंतज़ार नहीं करता। यह अनुमान लगाता है, अनुकूल होता है, और हमारी ज़िंदगी में इतनी सहजता से घुल जाता है कि, सच कहें तो, हम ध्यान भी नहीं देते। जैसे ही सुबह हमारे फोन की स्क्रीन जलती है, AI वहाँ मौजूद होता है। यह तय करता है कि हम खबरें कैसे पाते हैं, हम एक-दूसरे से कैसे बात करते हैं, और क्या चीज़ हमारे लिए महत्वपूर्ण है। जैसे एक शांत रूममेट, जो हमेशा देख रहा है, हमेशा सीख रहा है, और हमें भी उसी तरह आकार दे रहा है ।

शुरुआत में, यह सब शुद्ध प्रगति जैसा लगता है । AI हमारी खामियों को सुधारता है, उबाऊ कामों को खत्म करता है। यह सवाल पूछने से पहले जवाब दे देता है, अनगिनत विकल्पों में से छांटकर हमें सही चीज़ देता है - खबरें, संगीत, खरीदारी, जो भी हो । यह किसी चमत्कार जैसा लगता है। लेकिन सच यह है - सुविधा की हमेशा एक कीमत होती है। अगर आप देखना चाहते हैं कि AI वास्तव में क्या कर रहा है, तो आपको यह समझना होगा कि यह सीखता कैसे है। AI हमारे व्यवहार पर प्रशिक्षण

लेता है - हम क्या कहते हैं, कैसे व्यवहार करते हैं, हमारी हर पसंद और हर क्लिक। यह शोर में से संकेत निकालता है और अनुमान लगाता है कि हम अगला कदम क्या उठाएँगे। AI मूल रूप से मानव व्यवहार का एक मिश्रण है, जिसे तेज़ी और सटीकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। और फिर यह चक्र शुरू होता है।

ये सिस्टम अब सिर्फ हमारे इनपुट का इंतज़ार नहीं करते; ये हमें प्रभावित भी करने लगते हैं। अचानक, एल्गोरिदम तय करते हैं कि हमें क्या देखना या खरीदना चाहिए, सोशल मीडिया वही पोस्ट दिखाता है जो हमें लंबे समय तक जोड़े रखे, सर्च इंजन ऐसे परिणाम दिखाते हैं जिनके पीछे के नियम कुछ ही लोग पूरी तरह समझते हैं। हर छोटा संकेत एक दिशा में हल्का धक्का बन जाता है, और यह इतना सूक्ष्म होता है कि हमें पता भी नहीं चलता। हम AI को अपना व्यवहार देते हैं, AI हमें दिखाता है कि क्या करना है, और यह चक्र चलता रहता है। यह सब पृष्ठभूमि में होता है, चुपचाप, हमारी पसंदों को दिशा देता हुआ - कभी मजबूर नहीं करता, बस कुछ विकल्पों को ज़्यादा सहज बना देता है। कुछ समय बाद, यह धुंधला हो जाता है। क्या हम सच में चुनाव कर रहे हैं, या हम उन विकल्पों में से चुन रहे हैं जो हमारे लिए पहले से तैयार किए गए हैं ?

यह और भी जटिल हो जाता है जब हम सच और जानकारी की बात करते हैं। समस्या यह नहीं है कि जानकारी कम है - बल्कि बहुत ज़्यादा है। असली चुनौती है यह समझना कि क्या सच है, क्या भरोसेमंद है, और क्या महत्वपूर्ण है। और AI इन सब के बीच खड़ा है, तय करता हुआ कि क्या ऊपर आएगा और क्या दब जाएगा।

फर्जी वीडियो, AI द्वारा लिखे गए लेख, एल्गोरिदम से चलने वाली खबरें - सब अब एक साथ घुल गए हैं, जिससे सच और झूठ में फर्क करना मुश्किल हो गया है। झूठ और सच इतनी तेज़ी से फैलते हैं कि कुछ समय पहले यह विज्ञान कथा जैसा लगता। इस माहौल में, सच नाज़ुक हो जाता है, आसानी से टूटने या मोड़े जाने वाला। अगर हम AI द्वारा फ़िल्टर की गई जानकारी पर बहुत निर्भर हो जाएँ, तो हमारी वास्तविकता की समझ बदल सकती है। हम अपने ही विचारों के दायरे में बंद हो जाते हैं, जहाँ केवल वही सुनाई देता है जो हम पहले से मानते हैं। असहमति कम हो जाती है, और समाज अलग-अलग समूहों में बंट जाता है। इसलिए AI सिर्फ गणना नहीं कर रहा - यह उस जगह को आकार दे रहा है जहाँ हमारे विचार जन्म लेते हैं। और यह सिर्फ जानकारी तक सीमित नहीं है। AI रचनात्मकता को भी प्रभावित कर रहा है। पहले, रचनात्मकता - संगीत बनाना, चित्र बनाना, लिखना - सिर्फ इंसानों का क्षेत्र था। अब AI गाने लिखता है, लेख तैयार करता है, चित्र बनाता है, और शैलियों की नकल करता है। "सिर्फ इंसान ही रचना कर सकते हैं - यह विचार अब उतना मजबूत नहीं रहा।

अगर कोई कंप्यूटर एक चित्र बनाए और कोई फर्क न कर पाए, तो क्या वह जादू छीन लेता है ? क्या रचनात्मकता केवल परिणाम में है, या उस अनुभव में जो उसे बनाने में लगता है ? इसके साथ ही, इंसान भी बदलने लगते हैं। रचनाकार अपने काम को एल्गोरिदम के अनुसार ढालने लगते हैं - लेखक ट्रेंड्स के अनुसार लिखते हैं, संगीतकार वायरल होने वाले गीत बनाते हैं, कलाकार लाइक्स पाने के लिए काम करते हैं। असली अभिव्यक्ति धीरे-धीरे पीछे छूट सकती है।

AI शायद रचनात्मकता को खत्म नहीं करेगा, लेकिन यह हमें सुरक्षित रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित कर सकता है, जहाँ मौलिकता कम होती जाती है। और इसके पीछे एक बड़ा सवाल है: स्वतंत्र इच्छा का क्या ? हम मानते हैं कि हम स्वतंत्र सोच रखते हैं। हम निर्णय लेते हैं, संघर्ष करते हैं, और अपने रास्ते बनाते हैं। यही हमें अर्थ

देता है । AI इस प्रक्रिया को आसान बनाता है - निर्णय, सुझाव, सब कुछ। लेकिन अगर हम इस पर बहुत निर्भर हो जाएँ, तो हम सवाल करना छोड़ सकते हैं। हम गहराई से सोचना बंद कर सकते हैं । यह सब किसी साजिश का हिस्सा नहीं है । AI को बेहतर परिणाम देने, लोगों को जोड़े रखने, और संतुष्ट रखने के लिए बनाया जाता है। लेकिन इसके प्रभाव दूर तक जाते हैं।

डेटा और निर्णय लेने की शक्ति कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित हो रही है। लोग क्या देखते हैं, क्या सोचते हैं - यह सब कुछ हद तक उन्हीं सिस्टम्स द्वारा तय होता है ।अगर ये सिस्टम पारदर्शी नहीं हैं, तो आम लोगों के लिए उन्हें समझना या चुनौती देना मुश्किल हो जाता है। AI किसी फिल्मी तरीके से दुनिया पर कब्जा नहीं करेगा । यह धीरे-धीरे हमारी ज़िंदगी में घुल जाएगा, और हमारे विकल्पों की सीमाएँ तय करेगा। फिर भी, AI को केवल खतरे के रूप में देखना गलत होगा। इसकी क्षमता बहुत बड़ी है। चिकित्सा में, यह बीमारियों का पता लगा सकता है, उपचार में मदद कर सकता है। शिक्षा में, यह सीखने को व्यक्तिगत बना सकता है। शोध में, यह नए आविष्कारों को तेज़ कर सकता है। तो सवाल यह नहीं है कि AI अच्छा है या बुरा। सवाल यह है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं । असली सवाल है: हम जागरूक कैसे रहें ? हमें सवाल पूछने होंगे, अलग दृष्टिकोण देखने होंगे, और हर चीज़ को बिना सोचे स्वीकार नहीं करना होगा।

अंत में, हमारा AI के साथ संबंध एक संघर्ष नहीं है। हम इसे बनाते हैं, और यह हमें बनाता है। भविष्य हमारे चुनावों पर निर्भर करता है।

क्या हम सचेत रहेंगे ? या हम धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाएँगे ?

यह सिर्फ AI का सवाल नहीं है - यह इंसानियत का सवाल है। शायद AI की सबसे बड़ी खासियत यह नहीं है कि वह क्या सोचता है, बल्कि यह है कि वह हमें कैसे सोचने पर मजबूर करता है - और धीरे-धीरे, हम क्या बन जाते हैं।

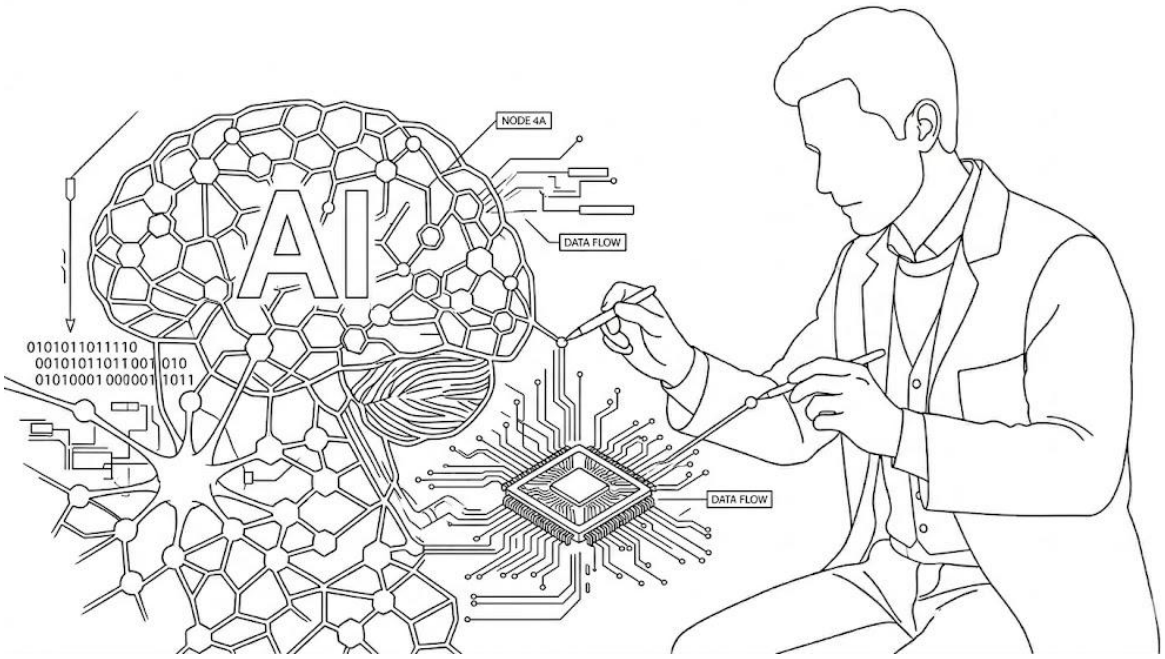

वर्तमान समय में युद्ध : एक गंभीर वैश्विक समस्या

सुश्री क्वीन मैरी जीजो
सुपुत्री श्री जीजो पॉल, वरि. लेखापरीक्षक

युद्ध आज के समय की सबसे गंभीर वैश्विक समस्याओं में से एक हैं । 21वीं सदी में विज्ञान, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में काफी प्रगति हाने के बावजूद दुनिया के कई हिस्से में सशस्त्र संघर्ष जारी है । आधुनिक युद्ध केवल सेनाओं के बीच लड़ाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें राजनीनिक प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय विवाद, साइबर युद्ध और वैचारिक संघर्ष भी शामिल हैं । दुनिया में चल रहे कई युद्ध यह दिखाते हैं कि आधुनिक युद्ध कितना जटिल और विनाशकारी हो चुका हैं ।

सबसे महत्वपूर्ण वर्तमान संघर्षों में से एक रूस-युक्रेन युद्ध हैं । यह युद्ध 2022 में शुरू हुआ जब रूस ने युक्रेन पर बड़े पैमाने पर हमला किया । यह संघर्ष कई वर्षों से जारी हैं और इसके कारण हजारों लोगों की मृत्यु हो चुकी है तथा भारी मात्रा में बुनियादी ढांचे का विनाश हुआ हैं । मिसाइल हमलों और सैन्य कार्रवाइयों के कारण शहर, बिजली संयंत्र और परिवहन व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुए हैं । इस युद्ध के कारण लाखों लोग अपने घर छोड़कर यूरोप के अन्य देशों में शरण लेने के लिए मजबूर हुए हैं । इसके अलावा इस युद्ध अन्य देशों पर भी असर पड़ा हैं, क्योंकि दोनों देश गेहूं, तेल और गैस के महत्वपूर्ण निर्यातक है ।

एक अन्य प्रमुख उदाहरण इज़राइल और हमास के बीच गाजा क्षेत्र में चल रहा युद्ध हैं । अक्टूबर 2023 में हमास द्वारा इज़राइल पर किए गए हमलों के बाद यह संघर्ष और तेज हो गया । इसके जवाब में इज़राइल ने गाज़ा में बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई शुरू की । लगातार हवाई हमलों और जमीनी लडाई के कारण गाजा के कई हिस्सें में भारी तबाही हुई हैं और बड़ी संख्या में नागरिक हलाहल हुए हैं । हजारों लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं और पूरे मध्य पूर्व क्षेत्र में तनाव बढ़ गया हैं।

इसी प्रकार सुडान का गृहयुद्ध भी वर्तमान समय का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं । यह संघर्ष 2023 में देश के दो शक्तिशाली सैन्य समूहों के बीच सत्ता संघर्ष के कारण शुरू हुआ । इस युद्ध के कारण गंभीर मानवीय संकट उत्पत्र हो गया हैं । लाखों लोग अपने घरों से विस्थापित हो गए हैं और उन्हें भोजन, पानी तथा चिकित्सा सुविधाओं की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा हैं ।

इन युद्धों से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक संघर्ष केवल संबंधित देशों को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को प्रभावित करता है । ईंधन की कीमतें बढ़ती हैं और वैश्विक राजनीतिक तनाव भी बढ़ जाता हैं । युद्ध का सबसे आधिक प्रभाव आम नागरिकों पर पड़ता हैं क्योंकि वे अपने घर, रोजगार और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं को खो देते हैं ।

इसलिए विश्व में स्थायी शांति स्थापिन करने के लिए संवाद, सहयोग और अंतरराष्ट्रीय प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं ।

भारतीय अर्थव्यवस्था

सुश्री पवित्रा प्रसाद,
सुपुत्री श्री प्रसाद, लेखापरीक्षक

"भारतीय अर्थव्यवस्था" वर्तमान समय में एक वैश्विक शक्ति के रूप में विकसित हुई है। आज भारत की जीडीपी दर 7% से अधिक है। हमारी अर्थव्यवस्था के मुख्य स्तंभ है –

(1) कृषि
(2) उद्योग
(3) सेवा

वर्तमान समय में विश्व का आर्थिक वातावरण अनिश्चित बना हुआ है। ऐसी परिस्थिति में हमें अपने घरेलू उत्पाद को मजबूत बनाये रखना होगा। मुद्रास्फीती पर लगाम लगाना आवश्यक है। समय-समय पर अमेरिका द्वारा टैरिफ लगाना, हमारी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।
भारत के विकास के दो मुख्य कारण है –

(1) हमारे देश की युवा आबादी
(2) डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास

जीडीपी के हिसाब से भारत वर्तमान समय में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। जीडीपी के इस विकास के मुख्य कारण है –

(1) आई टी कंपनियां
(2) "मेक इन इंडिया" का विस्तार
(3) फार्मास्थूटिकल्स
(4) पी एल आई योजनाएँ
(5) मजबूत बैंकिंग क्षेत्र

आज भारत की अर्थव्यवस्था जापान, इटली, फ्रांस और कनाडा जैसे विकसित देशों से आगे है। 2025 में जीडीपी दर 6.3 रहा है। भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया है। निजी और सार्वजनिक कंपनियां मिलकर काम कर रही है।

मिश्रीत अर्थव्यवस्था में पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के ही गुण व्याप्त रहते हैं। योजना आयोग एवं नीति आयोग इस पर काम कर रहा है। वित्त वर्ष के पहले तीन महीने में ही सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 7.8% बढ़ने की संभावना है। आने वाले समय में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगी, ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है।

भारत सरकार ने राष्ट्र की आर्थिक शक्ति को मजबूत करने के लिए कई कदम उठायें है, उनमें मुख्य है –

(1) स्टार्ट अप इंडिया
(2) नेशनल कैरियर सर्विस (NCS)
(3) प्रोडक्शन लिंक्ड इन्सेन्टिव (PLI)
(4) प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना
(5) रिसर्च, डेवलपमेंट एवं इनोवेशन (RDI)
(6) मेक-इन-इंडिया
(7) प्रधानमंत्री गति शक्ति
(8) नेशनल इंडस्ट्रियल कॉरिडोर डेवलपमेंट प्रोग्राम (NICDP)
(9) प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना (सौर ऊर्जा के लिए)
(10) जीएसटी

भारत सरकार की इन महत्वपूर्ण योजनाओं से हमारा देश विकास के रास्ते पर तेजी से अग्रसर है।

पारिवारिक अपेक्षाओं के कारण वयस्क पुत्रों और पुत्रियों के करियर को आगे बढ़ाने में आने वाली भावनात्मक सीमाएँ

सुश्री जे आर मैथिली
सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ, स.लेप.अ.

प्रस्तावना

परिवार वह पहली संस्था है जो बच्चे के व्यक्तित्व, मूल्यों और महत्वाकांक्षाओं को आकार देती है। जैसे-जैसे बेटे और बेटियाँ वयस्क होते हैं, वे स्वतंत्र करियर लक्ष्य और व्यक्तिगत सपने बनाने लगते हैं। हालाँकि, भावनात्मक बंधन, पारिवारिक अपेक्षाएँ और सामाजिक दबाव अक्सर उनके करियर की राह में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। ये भावनात्मक बाधाएँ हमेशा नकारात्मक इरादे से नहीं होतीं; ये प्रेम, सुरक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों से उत्पन्न होती हैं। फिर भी, ये स्वतंत्रता, जोखिम लेने की क्षमता और व्यक्तिगत विकास को सीमित कर सकती हैं। समाज भर में वास्तविक जीवन के उदाहरण दर्शाते हैं कि पारिवारिक भावनाएँ करियर संबंधी निर्णयों को कितनी गहराई से प्रभावित करती हैं।

1. पारिवारिक अपेक्षाओं को पूरा करने का दबाव

कई वयस्क बच्चे अपने हितों के बजाय अपने माता-पिता के सपनों के अनुरूप करियर चुनने के लिए भावनात्मक दबाव का अनुभव करते हैं।

वास्तविक जीवन का उदाहरण: एक प्रसिद्ध उदाहरण *अरिजीत सिंह* हैं। अपने शुरुआती दिनों में, कई मध्यमवर्गीय भारतीय बच्चों की तरह, उन्हें एक स्थिर करियर बनाने की अपेक्षाओं का सामना करना पड़ा। हालाँकि, अनिश्चितता और शुरुआती असफलताओं के बावजूद, उन्होंने संगीत के प्रति अपने जुनून का अनुसरण किया। यदि उन्होंने पारिवारिक दबाव के कारण पारंपरिक मार्ग चुना होता, तो शायद भारत उनकी असाधारण संगीत सफलता का साक्षी नहीं बन पाता।

इसी प्रकार, कई इंजीनियरिंग या मेडिकल छात्र स्वीकार करते हैं कि उन्होंने अपने क्षेत्र का चयन माता-पिता की अपेक्षाओं के कारण किया, न कि व्यक्तिगत रुचि के कारण। बाद में, कुछ लोग अपने वास्तविक जुनून को कहीं और पाकर अपना करियर बदल लेते हैं। यह दर्शाता है कि भावनात्मक दबाव आत्म-खोज में कैसे बाधा डाल सकता है।

2. माता-पिता के प्रति भावनात्मक अपराधबोध और उत्तरदायित्व

माता-पिता की उम्र बढ़ने के साथ, बच्चे उनके कल्याण के लिए भावनात्मक रूप से जिम्मेदार महसूस करते हैं। कर्तव्य की यह भावना कभी-कभी करियर में आगे बढ़ने की संभावनाओं को सीमित कर देती है।

वास्तविक जीवन का उदाहरण: बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले कई पेशेवर अंतरराष्ट्रीय असाइनमेंट ठुकरा देते हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता को अकेला नहीं छोड़ना चाहते। उदाहरण के लिए, वैश्विक नौकरी प्लेसमेंट के

दौरान, भारतीय पेशेवरों को अक्सर परिवार के प्रति भावनात्मक लगाव और उत्तरदायित्व के कारण विदेशों में अधिक वेतन वाली नौकरियों को ठुकराते देखा जाता है।

भारतीय परिवारों में एक आम स्थिति यह है कि सबसे बड़ा बेटा उद्यमशीलता से बचता है क्योंकि उसे डर होता है कि आर्थिक अस्थिरता उसके परिवार की सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। भले ही उसके पास नए विचार हों, भावनात्मक उत्तरदायित्व उसे जोखिम लेने से रोकता है।

3. सामाजिक आलोचना का डर

कई समाजों में, करियर संबंधी निर्णय "लोग क्या कहेंगे" से प्रभावित होते हैं। परिवार प्रतिष्ठा और सामाजिक तुलना को लेकर चिंतित रहते हैं।

वास्तविक जीवन का उदाहरण:पी. वी. सिंधु के मामले पर विचार करें। खेल को पूर्णकालिक करियर के रूप में चुनना कभी चिकित्सा या इंजीनियरिंग जैसे पारंपरिक व्यवसायों की तुलना में जोखिम भरा माना जाता था। हालांकि, परिवार के मजबूत समर्थन से उन्होंने सामाजिक शंकाओं को दूर किया और ओलंपिक पदक विजेता बनीं। यदि उनके परिवार ने सामाजिक आलोचना को महत्व दिया होता, तो उनका करियर सीमित हो सकता था। दूसरी ओर, अभिनय, फैशन डिजाइन या डिजिटल कंटेंट क्रिएशन में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले कई युवा अपने सपनों को छोड़ देते हैं क्योंकि रिश्तेदार इन क्षेत्रों को अस्थिर या अपरंपरागत बताकर उनकी आलोचना करते हैं।

4. अतिसुरक्षा और भावनात्मक निर्भरता

माता-पिता अक्सर अपने बच्चों को असफलता से बचाने की कोशिश करते हैं। सुरक्षा स्वाभाविक है, लेकिन अत्यधिक नियंत्रण स्वतंत्रता को सीमित कर देता है।

वास्तविक जीवन का उदाहरण: सुरक्षा संबंधी चिंताओं के कारण कई युवा महिलाओं को कॉर्पोरेट पदों के लिए महानगरों में जाने से हतोत्साहित किया जाता है। यहां तक कि उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि मजबूत होने पर भी, भावनात्मक अतिसुरक्षा उनके विकास और प्रगति को सीमित कर देती है।

इसी प्रकार, कुछ युवा उद्यमियों का कहना है कि उनके परिवारों ने नुकसान के डर से उनके व्यावसायिक विचारों को हतोत्साहित किया। इसके विपरीत, *रितेश अग्रवाल* जैसे उद्यमी शुरुआती शंकाओं और जोखिमों के बावजूद दृढ़ रहने के कारण सफल हुए। पारिवारिक झिझक ऐसी सफलता की कहानियों को सीमित कर सकती थी।

5. लिंग आधारित भावनात्मक सीमाएँ

बेटियों को अक्सर विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारियों से संबंधित भावनात्मक दबाव का सामना करना पड़ता है, जबकि बेटों को वित्तीय स्थिरता का बोझ उठाना पड़ता है।

वास्तविक जीवन का उदाहरण: कई मध्यमवर्गीय परिवारों में, बेटियों को शिक्षण या बैंकिंग नौकरियों को चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि उन्हें "सुरक्षित" और "परिवार के अनुकूल" माना जाता है। सशस्त्र बलों या कॉर्पोरेट नेतृत्व में शामिल होने की इच्छुक महिला को भावनात्मक प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है।

वहीं दूसरी ओर, कला या समाज सेवा में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले बेटों पर उच्च वेतन वाली कॉर्पोरेट नौकरियों में जाने का दबाव

पड़ सकता है क्योंकि उनसे परिवार का मुख्य कमाने वाला होने की अपेक्षा की जाती है। लिंग आधारित यह भावनात्मक दबाव करियर संबंधी निर्णयों को प्रभावित करता है।

6. व्यक्तिगत सपनों और पारिवारिक पहचान के बीच संघर्ष

जब व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं पारिवारिक परंपराओं से भिन्न होती हैं, तो भावनात्मक संघर्ष तीव्र हो जाता है।

वास्तविक जीवन का उदाहरण: एक आम उदाहरण उन व्यावसायिक परिवारों के बच्चों का है जो पारिवारिक व्यवसाय को आगे बढ़ाने के बजाय रचनात्मक या अकादमिक क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं। कई लोग भावनात्मक रूप से संघर्ष करते हैं क्योंकि पारिवारिक व्यवसाय को अस्वीकार करना पारिवारिक विरासत को अस्वीकार करने जैसा लगता है।

ऐसे भी मामले हैं जहां पहली पीढ़ी के स्नातक स्टार्टअप शुरू करना चाहते हैं, लेकिन उनके परिवार सुरक्षा के लिए सरकारी नौकरियों को प्राथमिकता देते हैं। "स्थिरता बनाम जुनून" का यह अंतर भावनात्मक तनाव पैदा करता है।

7. मानसिक स्वास्थ्य और करियर संतुष्टि पर प्रभाव

भावनात्मक सीमाएं दीर्घकालिक असंतोष का कारण बन सकती हैं। जो लोग अपने सपनों को दबाते हैं, वे अक्सर निराशा, तनाव और प्रेरणा की कमी का अनुभव करते हैं।

वास्तविक जीवन का अवलोकन: करियर संतुष्टि पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि जो लोग आंतरिक रुचि के आधार पर करियर चुनते हैं, वे बाहरी दबाव में करियर चुनने वालों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं और अधिक नौकरी संतुष्टि का अनुभव करते हैं। कई पेशेवर लोग 20 या 30 वर्ष की आयु के आसपास अपना करियर बदल लेते हैं क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि उनका शुरुआती फैसला पारिवारिक अपेक्षाओं से भावनात्मक रूप से प्रभावित था।अपने जुनून को आगे बढ़ाने में देरी कभी-कभी समय और अवसरों की हानि का कारण बनती है।

निष्कर्ष

पारिवारिक प्रेम और मार्गदर्शन सफलता के अत्यावश्यक स्तंभ हैं। हालांकि, अपराधबोध, सामाजिक दबाव, अत्यधिक सुरक्षा और कठोर अपेक्षाएं जैसी भावनात्मक बाधाएं वयस्क बेटों और बेटियों के करियर विकास को सीमित कर सकती हैं। सफल व्यक्तियों के वास्तविक जीवन के उदाहरण दर्शाते हैं कि परिवार के प्रति सम्मान और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

माता-पिता और बच्चों के बीच स्वस्थ संवाद भावनात्मक संघर्ष को कम कर सकता है। परिवारों को यह समझना चाहिए कि सच्ची सुरक्षा केवल स्थिर नौकरियों से ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संतुष्टि और आत्मविश्वास से भी मिलती है। इसी प्रकार, बच्चों को अपने परिवारों को आश्वस्त करना चाहिए और जिम्मेदारी से, सोच-समझकर करियर संबंधी निर्णय लेने चाहिए।

जब भावनात्मक दबाव की जगह भावनात्मक समर्थन ले लेता है, तो व्यक्ति पेशेवर सफलता और मजबूत पारिवारिक बंधन दोनों प्राप्त कर सकते हैं।

फलों का राजा आम

श्री योगेश 'नवीन'

रसाल, सहकार, आम्र, कामबल्लभ आदि अनेक नामों से जाना जाता है आम को। सभी फलों की तुलना में अधिक गुणकारी, रोग नाशक व स्वास्थ्यवर्द्धक होने के कारण इसे फलों का राजा कहा गया है और शायद इसीलिए कहा गया है कि जिस तरह स्वर्ग में अमृत होता है, उसी तरह पृथ्वी पर आम या रसाल ही अमृत के रूप में है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में आम की लगभग एक हजार से अधिक किस्में पाई जाती है। आम का वैज्ञानिक नाम मैगिफेरा इन्डिका है। इसकी अनेक जातियां व उपजातियां मिलती है, उन्ही के अनुसार इसकी कितनी ही किस्मों का नामकरण किया गया है यथाः हापुस, दशहरी, लंगड़ा, चौसा, सफेदा, तोतापुरी आदि।

आम का वृक्ष सघन तथा विशाल होता है। अनुकूल जलवायु मिलने पर इसका वृक्ष 50 फीट की ऊँचाई तक पहुँच जाता है। इसका तना लम्बा, मोटा और मजबूत होता है, छाल खुरदरी व रंग में मटमैली या काली होती है। आम के पेड़ की पत्तियाँ गहरे हरे रंग की व लम्बी होती है। आम का छिलका मोटा, फल गूदेदार, पीला या हल्के नारंगी रंग का होता है।

आम कश्मीर से कन्या कुमारी तक तथा पंजाब से आसाम तक अर्थात लगभग संपूर्ण भारत में पैदा होता है। पैदावार और क्षेत्र की दृष्टि से आम की निम्न प्रमुख किस्में है:

पूर्वी भारत - गुलाब, लंगड़ा, हिम सागर, खास
पश्चिमी भारत- राजापुरी, अलकास्ते, पैरी
उत्तरी भारत- चौसा, दशहरी, लंगड़ा, बाम्बे
दक्षिण भारत- रोमानी, बादाम, स्वर्ण रेखा, नीमल, बैंगलोरी, रसपुरी

आम को यो ही फलों का राजा नहीं कहा गया है। इसमें पाये जाने वाले तत्व एवं इसके गुणों को देखते हुए आयुर्वेद में बताया गया है कि पका हुआ आम मधुर, सुगंधियुक्त, रक्त-माँस-बल तथा पित्त-शामक होता है। पौष्टिकता की दृष्टि से आम में कार्बोहाईडेट, प्रोटीन, कैल्शियम तथा आयरन प्रचुर मात्रा में होते है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार अच्छे पके आम में जल 81 प्रतिशत, कार्बोहाईड्रेट 16.7 प्रतिशत, प्रोटीन 0.9 प्रतिशत, वसा 0.6 प्रतिशत और खनिज लवण 0.8 प्रतिशत पाया जाता है। आम की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमे उपस्थित शक्कर को पचाने के लिए शरीर में एकत्र उर्जा का उपयोग नहीं करना पड़ता वरना वह स्वयं पच जाती है।

एक पुरानी कहावत है 'आम के आम, गुठली के दाम ।' वास्तव में आम तो खाने के काम आता ही है, इसकी गुठली के साथ-साथ इसके पेड़ की छाल, लकड़ी व पत्ते भी उपयोगी होते हैं ।

- गर्मी में कच्चा आम, जिसे कैरी कहते है, का पना पीने से लू नहीं लगती तथा कब्ज दूर होती है । पेट संबंधी अन्य विकारों में भी कैरी का पन्ना रामबाण औषधि है ।
- सभी फलों की अपेक्षा आम में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । इस दृष्टि से नेत्रों के लिए आम सर्वश्रेष्ठ फल है ।
- आम की टहनी का दातुन के रूप में उपयोग करने से मुख की दुर्गन्ध दूर होती है तथा दाँत मजबूत होते है । आम के पेड़ के पत्तों को कुछ देर चबाकर थूक दें । कुछ दिनों तक नियमित रूप से ऐसा करने से दाँतों का हिलना व मसूड़ों से रक्त बहना बंद हो जाता है ।

• आम के सेवन के बाद दूध पीने से अथवा आम-रस में दूध मिलाकर तैयार किया गया पेय (आमरस या मैगो शेक) शरीर के लिये बहुत लाभकारी होता है । यह शीतल, रक्त-शोधक तथा वात-पित्त नाशक होता है और चेहरे पर कांति लाता है ।

- आम के पत्तों को जलाकर इसकी राख को घाव पर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है।
- रात्रि में भोजनोपरांत आम खाकर दूध पीने से थकावट दूर हो जाती है तथा नींद अच्छी आती है ।
- आम की गुठली को सुखाकर राख में भून लें । भूनी हुई गुठली खाकर पानी पीने से दस्त रोग ठीक हो जाता है ।
- आम के सेवन के कुछ देर बाद पानी पीने से आँतों की सफाई हो जाती है ।
- पका हुआ आम राख में भून कर ठंडा होने के बाद चूसने से सूखी खाँसी में आराम मिलता है ।
- आम के एक कप रस में 50 ग्राम शहद मिलाकर नियमित रूप से सेवन करने से क्षय रोग में लाभ होता है । यह मिश्रण वात व कफ नाशक भी होता है ।
- आम की गुठली को पीसकर मिश्री मिलाकर पीने से नक्सीर आना बंद हो जाता है ।
- आम रस में दूध, एक चम्मच अदरक का रस तथा चीनी मिलाकर पीने से दिमाग की कमजोरी दूर होती है तथा हिमोग्लोबिन में वृद्धि होती है ।
- आम के पत्तों का रस निकालकर कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जाता है ।
- आम के पत्तो को पानी में उबालकर छानकर पीने से बवासीर में लाभ होता है ।
- दूध मिलाकर तैयार किया गया आमरस पीने से कमजोरी दूर होती है, वजन बढ़ता है तथा कुछ ही समय में शरीर पुष्ट हो जाता है।

आम का इतिहास काफी पुराना है । महाकवि कालीदास ने अपने काव्य में इसका गुणगान किया है तो सिकंदर ने इसके स्वाद को खूब सराहा है । अकबर ने तो आम के स्वाद और उपयोगिता से प्रभावित होकर इसके हजारों वृक्ष लगवाए । आम से संबंधित अनेक लोकगीत, लोकोक्तियाँ और मुहावरे है । पूजा, हवन-यज्ञ व अन्य मांगलिक कार्यों के साथ-साथ हमारे दैनिक जीवन में आमफल, इसके पत्ते व लकड़ी का बहुतायत से उपयोग होता है ।

स्वर्ग का फल कहा जाने वाला आम दुनिया में सर्वाधिक पसंद किये जाने वाला फल है । पका हुआ आम शरीर के लिए उपयोगी तथा एक अच्छी खुराक है । फिर भी इसे उपयोग में लेने से पहले कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिये । आम को प्रयोग में लेने से पूर्व इसे एक-दो घंटे ठंडे पानी में रख देना चाहिये । इससे आम की गरमी निकल जाती है और फोड़े-फुंसियों का डर नहीं रहता । आम के सेवन के तुरंत बाद पानी नहीं पीना चाहिये और इसका उचित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिये ।

वह युद्ध जो एकता और बंधुत्व को नष्ट कर देता है

सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ, स.लेप.अ.

प्रस्तावना

युद्ध को अक्सर सत्ता, क्षेत्र, सुरक्षा या विचारधारा के लिए संघर्ष के रूप में वर्णित किया जाता है। हालांकि, राजनीतिक रणनीतियों और सैन्य अभियानों से परे, युद्ध की एक गहरी सामाजिक कीमत होती है। यह न केवल बुनियादी ढांचे और अर्थव्यवस्थाओं को नष्ट करता है, बल्कि लोगों के बीच एकता और भाईचारे को भी कुचल देता है। एकता से तात्पर्य किसी राष्ट्र या समुदाय के भीतर एकजुटता की भावना से है, जबकि भाईचारा का अर्थ है बंधुत्व, आपसी सम्मान और साझा मानवता। जब युद्ध छिड़ता है, तो ये मूल्य कमजोर पड़ जाते हैं। विश्वास की जगह संदेह ले लेता है, करुणा की जगह घृणा ले लेती है, और विभाजन बंधनों से भी अधिक मजबूत हो जाते हैं।

आज की दुनिया में, रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध और इज़राइल और फ़िलिस्तीन के बीच चल रहे संघर्ष जैसे उदाहरण दर्शाते हैं कि युद्ध न केवल राष्ट्रों के भीतर, बल्कि पूरे विश्व में एकता को कैसे नुकसान पहुंचा सकता है। ये संघर्ष इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि युद्ध किस प्रकार भावनात्मक, सामाजिक और राजनीतिक विभाजन पैदा करता है, जिन्हें भरने में पीढ़ियां लग जाती हैं।

युद्ध और राष्ट्रीय एकता का विघटन

शांति काल में, किसी देश के नागरिक भले ही विचारों, धर्मों या राजनीतिक मान्यताओं में भिन्न हों, फिर भी वे एक राष्ट्रीय पहचान साझा करते हैं। लेकिन युद्ध इस एकता को तोड़ सकता है। लोग चरमपंथी रुख अपनाने लगते हैं। युद्ध पर सवाल उठाने वालों को देशद्रोही करार दिया जा सकता है, जबकि अन्य आक्रामक कार्रवाई की मांग करते हैं। आंतरिक मतभेद और भी तीव्र हो जाते हैं।

उदाहरण: रूस-यूक्रेन युद्ध

रूस और यूक्रेन के बीच 2022 में शुरू हुए युद्ध ने न केवल युद्धक्षेत्र में विनाश किया है, बल्कि समाजों में भी गहरी दरारें पैदा की हैं। दोनों देशों में रिश्तेदारों वाले परिवारों को भावनात्मक पीड़ा और अलगाव का सामना करना पड़ा है। कुछ समुदायों में, संघर्ष के संबंध में विरोधी राजनीतिक विचारों के कारण मित्रताएँ टूट गई हैं।

इसके अलावा, युद्ध ने वैश्विक जनमत को विभाजित कर दिया है। कुछ राष्ट्र यूक्रेन का दृढ़ता से समर्थन करते हैं, जबकि अन्य तटस्थ या रणनीतिक स्थिति बनाए रखते हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में तनाव पैदा हुआ है, जिससे वैश्विक बंधुत्व कमजोर हुआ है।

युद्ध और घृणा का उदय

बड़बोलापन सहानुभूति और मानव जीवन के प्रति सम्मान पर आधारित होता है। हालांकि, युद्ध अक्सर ऐसे विचारों को बढ़ावा देता है जो "शत्रु" को अमानवीय बना देते हैं। जब लोग दूसरों को साथी इंसान के बजाय खतरे के रूप में देखने लगते हैं, तो नफरत बढ़ जाती है।

उदाहरण: इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष

इज़राइल और फिलिस्तीन के बीच चल रहे संघर्ष के कारण भारी जन पीड़ा हुई है। भौतिक विनाश के अलावा, इस संघर्ष ने समुदायों के बीच

भावनात्मक क्रोध और अविश्वास को और भी तीव्र कर दिया है। वैश्विक स्तर पर, विरोध प्रदर्शनों और जवाबी विरोध प्रदर्शनों ने दिखाया है कि यह संघर्ष क्षेत्र से परे लोगों को किस प्रकार प्रभावित करता है।

विश्वविद्यालय परिसरों, कार्यस्थलों और दुनिया भर के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर तीखी बहसें और ध्रुवीकरण देखने को मिला है। संवाद को बढ़ावा देने के बजाय, युद्ध का माहौल अक्सर शत्रुता को जन्म देता है। यह दर्शाता है कि युद्ध किस प्रकार विभाजन को सीमाओं से परे फैलाता है, जिससे वैश्विक भाईचारे को नुकसान पहुंचता है।

सोशल मीडिया और विभाजन का प्रसार

पहले के समय में, युद्ध की जानकारी समाचार पत्रों और आधिकारिक प्रसारणों तक ही सीमित थी। आज, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हर घटना को तुरंत फैला देते हैं। चित्र, वीडियो और राय तेज़ी से फैलते हैं, कभी-कभी बिना सत्यापन के भी। इससे तर्कसंगत चर्चाओं के बजाय भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं।

उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान, दोनों पक्षों के सोशल मीडिया अभियानों ने राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काया। देशभक्ति स्वाभाविक है, लेकिन अतिवादी विचार कभी-कभी राष्ट्रीयता के आधार पर व्यक्तियों के साथ भेदभाव को जन्म देते हैं।

इसी तरह, इज़राइल-फिलिस्तीन संकट के दौरान, विभिन्न देशों में ऑनलाइन घृणास्पद भाषण बढ़ गए। शांति को बढ़ावा देने के बजाय, डिजिटल मंच दोषारोपण और क्रोध के मैदान बन गए। इस प्रकार, युद्ध के दौरान आधुनिक तकनीक का दुरुपयोग होने पर भाईचारा और भी कमज़ोर हो जाता है।

समाजों को विभाजित करने वाले आर्थिक और मानवीय परिणाम

युद्ध मुद्रास्फीति, नौकरी छूटने और आवश्यक वस्तुओं की कमी जैसी आर्थिक कठिनाइयों को जन्म देता है। ये कठिनाइयाँ अक्सर समाजों के भीतर एक-दूसरे पर दोषारोपण को जन्म देती हैं। नागरिक अपनी पीड़ा के लिए सरकारों, अल्पसंख्यकों या प्रवासियों को दोषी ठहरा सकते हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक खाद्य और ईंधन आपूर्ति को प्रभावित किया। आयात पर निर्भर देशों को बढ़ती कीमतों का सामना करना पड़ा। आर्थिक तनाव कभी-कभी नागरिकों में निराशा बढ़ाता है, जिससे सामाजिक सद्भाव कमजोर होता है।

शरणार्थी संकट एक और बड़ा परिणाम है। लाखों यूक्रेनी नागरिक सुरक्षा के लिए पड़ोसी देशों में भाग गए । हालांकि कई देशों ने सहानुभूति दिखाई, लेकिन शरणार्थी आंदोलनों ने संसाधनों, सुरक्षा और रोजगार के मुद्दों पर बहस छेड़ दी । इस तरह की बहसें कभी-कभी मेजबान समाजों के भीतर विभाजन पैदा कर देती हैं।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव और भाईचारे का ह्रास

युद्ध व्यक्तियों को आघात पहुँचाता है । युद्ध से लौटने वाले सैनिक अक्सर भावनात्मक रूप से घायल हो जाते हैं । विनाश के साक्षी नागरिक भय और दुःख का अनुभव करते हैं। आघात से दृष्टिकोण कठोर हो सकते हैं और सहानुभूति कम हो सकती है।

युद्ध क्षेत्रों में पलने-बढ़ने वाले बच्चे उन समुदायों के प्रति अविश्वास विकसित कर सकते हैं जिन्हें उन्हें शत्रु के रूप में देखना सिखाया जाता है । शत्रुता का यह पीढ़ी दर पीढ़ी संचरण सुलह को कठिन बना देता है । जहाँ भय दैनिक जीवन पर हावी रहता है, वहाँ एकता और भाईचारा कायम नहीं रह सकता।

राजनीतिक ध्रुवीकरण और आंतरिक संघर्ष

युद्ध किसी देश के भीतर राजनीतिक ध्रुवीकरण को भी तीव्र कर सकता है। विपक्षी दल सरकारी निर्णयों की आलोचना कर सकते हैं, जबकि सत्ताधारी दल सैन्य कार्रवाइयों को उचित ठहरा सकते हैं । रचनात्मक बहस के स्थान पर, अत्यधिक ध्रुवीकरण हो सकता है।

लोकतांत्रिक समाजों में, असहमति सामान्य है। हालाँकि, जब युद्ध भावनाओं को तीव्र कर देता है, तो संवाद टकराव में बदल जाता है। नागरिक कठोर गुटों में बँट सकते हैं, जिससे राष्ट्रीय भाईचारे की भावना कमजोर हो जाती है।

भाईचारे का वैश्विक पतन

युद्ध केवल युद्धक्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहता। यह व्यापारिक संबंधों, राजनयिक संबंधों और वैश्विक सहयोग को प्रभावित करता है । प्रतिबंध, जवाबी प्रतिबंध और रणनीतिक गठबंधन अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नया रूप देते हैं। उदाहरण के लिए, यूक्रेन युद्ध के कारण कई पश्चिमी देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाए । इससे वैश्विक स्तर पर राजनयिक संबंधों में तनाव और आर्थिक बदलाव आए । सहयोग को बढ़ावा देने के लिए गठित वैश्विक संस्थानों को तब चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जब प्रमुख शक्तियां आपस में कड़ा मतभेद रखती हैं। इस प्रकार, युद्ध न केवल राष्ट्रीय एकता बल्कि अंतरराष्ट्रीय भाईचारे को भी बाधित करता है।

क्या एकता युद्ध के बाद भी बनी रह सकती है ?

अपने विनाशकारी स्वरूप के बावजूद, इतिहास गवाह है कि युद्ध के बाद एकता का पुनर्निर्माण किया जा सकता है । सुलह के लिए संवाद, क्षमा और सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है । शांति समझौते, मानवीय प्रयास और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उदाहरण के लिए, पिछले वैश्विक संघर्षों के बाद, सहयोग को बढ़ावा देने और भविष्य में युद्धों को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय संगठनों का गठन किया गया था। शांति मंचों और राजनयिक मंचों का निर्माण मानवता की भाईचारे को बहाल करने की इच्छा को दर्शाता है। हालांकि, एकता के पुनर्निर्माण में समय लगता है । भावनात्मक घाव जल्दी नहीं भरते । ईमानदारीपूर्ण संवाद और आपसी सम्मान के माध्यम से विश्वास को धीरे-धीरे बहाल किया जा सकता है।

युद्ध और सांस्कृतिक सद्भाव का विनाश

युद्ध का एक और गंभीर प्रभाव सांस्कृतिक एकता का विनाश है । प्रत्येक राष्ट्र साझा परंपराओं, भाषाओं, त्योहारों और सामूहिक स्मृतियों पर आधारित होता है । युद्ध इस सांस्कृतिक ताने-बाने को क्षति पहुँचाता है । ऐतिहासिक स्मारक नष्ट हो जाते हैं, स्कूल और

विश्वविद्यालय बंद हो जाते हैं, और कलात्मक अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध लग जाता है।

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष में कई सांस्कृतिक स्थल और सार्वजनिक संस्थान प्रभावित हुए हैं। सांस्कृतिक विरासत, जो कभी एकता और गौरव का प्रतीक थी, युद्धकाल में असुरक्षित हो जाती है। जब सांस्कृतिक प्रतीकों को नुकसान पहुँचता है, तो लोग अपनी पहचान खोने का अनुभव करते हैं। इससे नागरिकों के बीच भावनात्मक बंधन कमजोर हो जाता है।

इसी प्रकार, इज़राइल और फ़िलिस्तीन के बीच चल रहे संघर्ष में, पवित्र स्थल और ऐतिहासिक क्षेत्र दोनों समुदायों के लिए गहरा भावनात्मक महत्व रखते हैं। जब ऐसे स्थानों पर खतरा मंडराता है, तो तनाव और बढ़ जाता है। संस्कृति, जो लोगों को एकजुट करती है, युद्ध के दौरान विभाजन का कारण बन जाती है।

शिक्षा और युवा एकता पर प्रभाव

युद्ध शिक्षा व्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित करता है। स्कूल बंद हो जाते हैं, छात्र विस्थापित हो जाते हैं और शिक्षक सुरक्षा के लिए पलायन कर जाते हैं। शिक्षा एकता की नींव है क्योंकि यह सहयोग, सहिष्णुता और सम्मान जैसे मूल्यों को सिखाती है। जब शिक्षा रुक जाती है, तो युवा मन गलत सूचनाओं और चरमपंथी विचारधाराओं के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए, लाखों यूक्रेनी बच्चों को अपने स्कूल छोड़कर अलग-अलग देशों की नई शिक्षा प्रणालियों में ढलना पड़ा। हालांकि कई देशों ने उनका स्वागत किया, लेकिन अचानक हुए विस्थापन ने भावनात्मक तनाव और पहचान संबंधी संघर्ष को जन्म दिया। दोस्तों और परिचित परिवेश से अलग हुए बच्चों में अलगाव की भावना विकसित हो सकती है।

संघर्ष क्षेत्रों में पलने-बढ़ने वाले युवाओं में कड़वाहट भी विरासत में मिल सकती है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सीखने के बजाय, उन्हें प्रतिशोध की कहानियों का सामना करना पड़ सकता है। इससे एक ऐसा चक्र बनता है जिससे आने वाली पीढ़ियों में एकता का पुनर्निर्माण करना कठिन हो जाता है।

आर्थिक असमानता और सामाजिक विखंडन

युद्ध अक्सर आर्थिक असमानता को बढ़ाता है। धनी व्यक्ति अपने धन को सुरक्षित रखने या स्थानांतरित करने के तरीके खोज लेते हैं, जबकि आम नागरिक नौकरी खोने, भोजन की कमी और मुद्रास्फीति से पीड़ित होते हैं। आर्थिक असमानता समाज में असंतोष पैदा कर सकती है।

रूस-यूक्रेन संघर्ष के वैश्विक आर्थिक प्रभावों, जिनमें ईंधन की कीमतों में वृद्धि और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान शामिल हैं, ने विकासशील देशों को काफी प्रभावित किया। जब बुनियादी ज़रूरतें महंगी हो जाती हैं, तो जनता में असंतोष बढ़ जाता है। यह असंतोष आंतरिक सामाजिक अशांति को जन्म दे सकता है, जिससे एकता और कमजोर हो जाती है।

समुदाय अपनी कठिनाइयों के लिए सरकारों, अल्पसंख्यक समूहों या विदेशी राष्ट्रों को दोषी ठहराने लगते हैं। संकट के समय एकजुट होने के बजाय, समाज कभी-कभी दबाव में बिखर जाते हैं।

शरणार्थी और वैश्विक बंधुत्व की परीक्षा

युद्ध के दौरान वैश्विक बंधुत्व की सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक यह है कि राष्ट्र शरणार्थियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। शरणार्थी शत्रु नहीं हैं; वे सुरक्षा की तलाश में पीड़ित हैं। उनकी उपस्थिति मेज़बान देशों को करुणा और एकजुटता का अभ्यास करने की चुनौती देती है।

यूक्रेन से लाखों लोगों के विस्थापन ने हाल के वर्षों में सबसे बड़े शरणार्थी संकटों में से एक को जन्म दिया। कई यूरोपीय देशों ने अपनी सीमाएँ खोल दीं और आश्रय, शिक्षा और रोज़गार सहायता प्रदान की। इसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बंधुत्व का प्रदर्शन किया।

हालाँकि, शरणार्थी परिस्थितियाँ संसाधनों, सांस्कृतिक मतभेदों और रोज़गार के

अवसरों पर बहस भी पैदा कर सकती हैं। यदि सावधानीपूर्वक प्रबंधन न किया जाए, तो ये बहसें मेज़बान समाजों के भीतर विभाजन का कारण बन सकती हैं। इस प्रकार, युद्ध अप्रत्यक्ष रूप से उन देशों की एकता की भी परीक्षा लेता है जो सीधे तौर पर संघर्ष में शामिल नहीं हैं।

शांति स्थापना और संवाद की आवश्यकता

युद्ध एकता को नष्ट करता है, जबकि शांति स्थापना के प्रयास इसे पुनर्स्थापित करने का प्रयास करते हैं। कूटनीति, मानवीय सहायता और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भाईचारे के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक साधन हैं। संघर्षरत पक्षों के बीच संवाद गलतफहमी को कम करने में सहायक होता है।

शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है; यह न्याय, विश्वास और सहयोग की उपस्थिति है। सरकारों, वैश्विक संगठनों और नागरिक समाजों को सहिष्णुता और सम्मान को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

इतिहास गवाह है कि सुलह संभव है। संवाद और सहयोग के माध्यम से पूर्व शत्रु आर्थिक और राजनीतिक साझेदार बन गए हैं। यह सिद्ध करता है कि एकता का पुनर्निर्माण किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए धैर्य, सहानुभूति और सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है।

अंतिम विचार

युद्ध राजनीतिक मतभेदों से शुरू हो सकता है, लेकिन इसके परिणाम सीमाओं और युद्धक्षेत्रों से कहीं अधिक व्यापक होते हैं। यह राष्ट्रों के भीतर एकता को नष्ट करता है, समुदायों के बीच भाईचारे को क्षति पहुँचाता है और विश्व भर में विभाजन फैलाता है। रूस और यूक्रेन तथा इज़राइल और फ़िलिस्तीन के बीच चल रहे मौजूदा संघर्ष दुनिया को याद दिलाते हैं कि युद्ध की कीमत केवल जानमाल के नुकसान से ही नहीं मापी जाती, बल्कि टूटे रिश्तों,खोए हुए भरोसे और भावनात्मक घावों से भी मापी जाती है।

मानव सभ्यता तभी प्रगति करती है जब एकता और भाईचारा मजबूत होते हैं। जब ये मूल्य ध्वस्त हो जाते हैं, तो समाज को गहरा कष्ट सहना पड़ता है। इसलिए, शांति, समझ और आपसी सम्मान को बढ़ावा देना न केवल एक राजनीतिक ज़िम्मेदारी है, बल्कि हर पीढ़ी का नैतिक कर्तव्य भी है।

विनाश के स्थान पर संवाद को चुनकर ही मानवता उस एकता और भाईचारे की रक्षा कर सकती है जो हमें आपस में बांधे रखती है।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 2025

राजभाषा विभाग ने 14-15 सितंबर 2025 को गांधीनगर, गुजरात में पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर गुजरात की राजधानी में आयोजित इस सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि भाग लिया । आदरणीय मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर सभा में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों तथा सभी भारतवासियों को हिंदी दिवस का संदेश दिया।
https://share.google/bUMCsvToINy8xxUn0

इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंदी संजय कुमार और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कई प्रकाशनों का विमोचन भी किया।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी ने कहा कि हिंदी भारतीय भाषाओं की साथी है और हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के बीच कोई टकराव नहीं है। उन्होंने कहा कि इसका सबसे बड़ा उदाहरण गुजरात है। गुजरात में स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल और के एम मुंशी जैसे विद्वानों ने हिंदी को स्वीकार किया और इसे बढ़ावा भी दिया। गुजराती और हिंदी के सह-अस्तित्व ने गुजरात को दोनों भाषाओं के विकास का एक उत्कृष्ट उदाहरण बना दिया।

श्री अमित शाह जी ने कहा कि पिछले पांच वर्षों से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन दिल्ली के बाहर देश के विभिन्न हिस्सों में आयोजित किया जा रहा है, जिससे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को मजबूत करने का बहुत अच्छा अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल बातचीत और प्रशासन की भाषा नहीं रहनी चाहिए, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, न्याय और पुलिसिंग की भाषा भी बननी चाहिए। जब सभी कार्य भारतीय भाषाओं में किए जाते हैं तो लोगों के साथ संबंध अपने आप गहरा हो जाता है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने सम्मेलन के दौरान अनुवाद टूल *भारती का भी लोकार्पण* किया और

भागीदारों को अवगत कराया कि सारथी अनुवाद प्रणाली हिंदी से सभी मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में आसान अनुवाद की सुविधा प्रदान करता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज की लड़ाई में तीन प्रमुख सिद्धांतों पर जोर दिया था: स्वराज, स्वाधर्म और स्वाभाषा, जो सभी राष्ट्रीय गौरव से जुड़े हुए हैं। जिस देश की बोली जाने वाली भाषा उसकी अपनी नहीं है, वह वास्तव में स्वतंत्रता या गौरव का अनुभव नहीं कर सकता है। हमारी भाषाओं के प्रति गौरव को बढ़ावा देने के लिए, शब्द सिंधु शब्दकोश बनाया गया था, जिसकी शुरुआत 51,000 शब्दों से हुई थी और अब यह 7 लाख शब्दों से अधिक हो गया है ओर 2029 तक यह दुनिया की सभी भाषाओं का सबसे बड़ा शब्दकोश बन जाएगा। यह शब्दकोश हिंदी को अधिक लचीला बना रहा है, जो व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली बोलचाल की भाषा बनने के लिए आवश्यक है। केंद्रीय गृह मंत्री ने यह भी उल्लेख किया कि महात्मा गांधी ने गुजराती शब्दकोश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, उन्होंने माना कि एक मजबूत मूल भाषा के बिना कोई समाज विश्व स्तर पर खड़ा नहीं हो सकता है। श्री शाह ने दिव्यांगजनों की क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस कार्यक्रम में प्रदर्शित एआई-संचालित चश्मे को चिन्हित किया, जो

दृष्टिबाधित व्यक्तियों की बहुत सहायता करेगा। इन चश्मों के साथ, जो लोग पूरी तरह से दृष्टिबाधित हैं, वे भी पढ़ सकते हैं, और जो कुछ भी वे पढ़ते हैं वह एआई-संचालित प्रणाली के माध्यम से उनकी मूल भाषा में सुनाई देगा। माननीय मंत्री जी द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों को ए आई आधारित चश्मा देते हुए कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

महात्मा गांधी द्वारा कहे अनुसार हिंदी वह भाषा है जो देश को एकजुट रखती है। संस्कृत ने हमें ज्ञान की नदी दी और हिंदी ने उस ज्ञान को हर घर तक पहुचाने का काम किया तथा मातृभाषाओं ने इसे हर व्यक्ति तक पहुंचाया। इसी तर्ज पर गृह मंत्रालय ने राजभाषा विभाग के तहत भारतीय भाषा अनुभाग का निर्माण किया है और देश भर के लगभग 539 शहरों में राजभाषा समितियों की स्थापना की जा चुकी है।

अन्य भाषा पृष्ठभूमि के लगभग 3 लाख 28 हजार सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षित किया गया है, 40,000 कर्मचारियों को टाइपिंग, 1,918 को आशुलिपि और 13,000 को अनुवाद में प्रशिक्षित किया गया है। जेईई, नीट और यूजीसी परीक्षाओं को 12 भाषाओं में शुरू किया है, जिससे मातृभाषा में पढ़ने वाले छात्रों की सफलता की संभावना बढ़ गई है केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) की परीक्षाएं भी अब 12 भाषाओं में आयोजित की जाती हैं। उन्होंने याद दिलाया कि 1970 के दशक में लोग कहते थे कि हिंदी अब अतीत की भाषा बनकर रह गयी है, लेकिन आज हम गर्व से कह सकते हैं कि राजभाषा और हमारी भारतीय भाषाएं भविष्य की भाषाएं हैं, और वे प्रौद्योगिकी, विज्ञान और न्याय की भाषाएं भी बनेंगी।

इंदौर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 2026: हिंदी के गौरव का उत्सव

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों का मुख्य उद्देश्य केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों और उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समीक्षा करना और उत्कृष्ट कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करना है। वर्ष 2025-26 के लिए मध्य, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 20 जनवरी 2026 को मध्य प्रदेश के इंदौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने वाली विभिन्न संस्थाओं और अधिकारियों को इस सम्मेलन में सम्मानित किया गया। राष्ट्रगान एवं दीप-प्रज्वलन से क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंदी संजय कुमार द्वारा किया गया । कार्यक्रम में उपस्थित सोलह सौ से अधिक हिंदी कर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें यह ध्यान रखना है कि भाषा बाधा न बने, सेतु बने।

सम्मेलन में अनेक विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए । इंदौर के सांसद श्री शंकर लालवानी ने कहा कि इंदौर महात्मा गांधी जी के हिन्दी आंदोलन की ऐतिहासिक भूमि रही है । राजभाषा विभाग के सचिव ने स्वागत भाषण में कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हिन्दी के प्रयोग में आमूल-चूल परिवर्तन आया है और अब इसे केवल अनुपालन तक सीमित न रखकर सृजन, संवाद और सहभागिता से जोड़ा जा रहा है। देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राकेश सिंघई ने राजभाषा विभाग की नवोन्मेषी पहलों की सराहना की । वरिष्ठ साहित्यकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने मध्य प्रदेश में हिन्दी में हो रहे ज्ञान-विज्ञान के कार्यों का उल्लेख करते हुए हिन्दी को विश्व के ललाट पर दमकती बिंदी बनाने का आह्वान किया। तेलुगु भाषी हिन्दी विद्वान प्रो. जे.एल. रेड्डी ने दक्षिण भारत में हिन्दी के समृद्ध इतिहास और उसकी आजीविका-संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न श्रेणियों में वर्ष 2024-25 के लिए पुरस्कार वितरित किए गए । पुरस्कारों को तीन मुख्य श्रेणियों (क्षेत्र 'क', 'ख' और 'ग') में विभाजित किया गया था । मध्य, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य के निष्पादन हेतु 80 कार्यालयों के अधिकारियों को प्रमाण-पत्र तथा शील्ड देकर सम्मानित किया गया । सम्मेलन में हिंदी के सांस्कृतिक महत्व, दक्षिण भारत में हिंदी की स्वीकार्यता, एआई युग में हिंदी की उपयोगिता, अनुवाद कार्य में तकनीकी सहयोग, नराकास की भूमिका तथा राजभाषा रिपोर्टिंग पर विचार-विमर्श हुआ। राजभाषा विभाग ने कार्यप्रणाली में तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए ई-ऑफिस और ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया है। मानकीकृत शब्दावली, आधुनिक भाषा-तकनीक और डिजिटल निगरानी प्रणाली से विभाग की कार्यकुशलता और पारदर्शिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना कर गृह मंत्री ने राज्यों के साथ उनकी आधिकारिक भाषाओं में संवाद स्थापित किया है, जिससे प्रशासनिक संवाद अधिक संवेदनशील, विश्वासपूर्ण और परिणामोन्मुख बना है। हिन्दी शब्द सिंधु जैसे डिजिटल शब्दकोशों के माध्यम से तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का मानकीकरण कर युवा शोधार्थियों और वैज्ञानिकों को अपनी भाषा में नवाचार का आत्मविश्वास प्राप्त हुआ है।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025

महालेखाकारों के कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम में दि. 14.09.2025 से दि. 29.09.2025 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह समुचित रूप से आयोजित किया गया जिसका समापन समारोह दि. 06.10.2025 को हुआ । राजभाषा विभाग के आदेशानुसार पिछले चार सालों से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी दिवस के दिन राष्ट्रीय तौर पर हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हो रहा है । 15 सितम्बर 2025 को कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की भागीदारी के साथ सुबह 11 बजे शपथ दिलाकर "हिंदी दिवस" का पालन किया गया ।

दि.17.09.2025 पूर्वाहन 11.00 बजे प्रतियोगिताओं का उद्घाटन श्री बाषा मेहम्मद एवं श्री डानिष मोहम्मद उप महालेखाकारों द्वारा किया गया । पखवाड़े के सिलसिले में दि. 17.09.2025 से दि. 24.09.2025 तक तीनों कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए 16 विभिन प्रतियोगिताएं चलायी गयीं । प्रतियोगिताओं की शुरुआत निबंध लेखन से हुई । प्रतियोगिताओं में निबंध लेखन के साथ साथ टिप्पण एवं आलेखन, सुलेखन, अंग्रेजी से हिंदी में और विलोमत: अनुवाद, प्रशासनिक हिंदी, वर्णानुक्रम, हस्तलेखन, कथा रचना, कविता रचना, कविता पाठ, आशुभाषण, हिंदी गीत – एकल (महिला एवं पुरुष), समूह गान, अंताक्षरी और प्रश्नोंतरी शामिल हैं । समूह गान प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने समूह बनाकर सुंदर सुंदर गीत प्रस्तुत किए । हिंदी पखवाड़े से संबंधित सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/ कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया ।

दि. 23.09.2025 को पूर्वाहन 10.30 बजे से 12.30 बजे तक अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्री षोजो लोबो, सहायक प्रबंधक, केनरा बैंक अंचल, तिरुवनंतपुरम द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया ।

06 अक्टूबर को सुबह 11.00 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया । समापन समारोह की शुरुआत सुश्री प्रीति अब्रहाम, महालेखाकार तथा श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार की उपस्थिति में सुश्री अतूर्वा सिन्हा, प्रधान महालेखाकार की अध्यक्षता में की गई । श्री बाषा मोहम्मद, उप महालेखाकार/ प्रशासन के स्वागत भाषण के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ । तदुपरांत हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के आदरणीय गृह मंत्री का विडिओ संदेश चलाकर बैठक की शुरुआत की गई । समापन समारोह में

स्वागत भाषण

अध्यक्षीय भाषण

आशीर्वाद भाषण

सुश्री अतूर्वा सिन्हा, प्रधान महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी पखवाड़े के सफल संचालन के लिए बधाई दी । श्रीमती प्रीति एब्रहाम, महालेखाकार ने भी अपने आशीर्वाद भाषण से इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

सदस्यगण

धन्यवाद ज्ञापन

हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के साथ-साथ, प्रोत्साहन योजना के तहत राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले हमारे कार्यालयों के

अधिकारियों/कर्मचारियों और अनुभागों को भी इस भव्य समारोह में सम्मानित किया गया।

पुरस्कार वितरण-प्रोत्साहन योजना

प्रधान महालेखाकार और महालेखाकारों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

रॉलिंग ट्रोफी

प्रतियोगिताओं के विजेता

श्री अनिष डी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा. व एएमजी-I) एवं संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समिति के संयोजक ने हिंदी पखवाड़ा 2025 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी अनुभागों व पदाधिकारियों को धन्यवाद अर्पित किया। राष्ट्रगान के साथ सभा समाप्त हुई।

शाखा कार्यालय, तृशूर

शाखा कार्यालय, तृशूर में भी तीनों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पखवाड़े की शुरुआत दिनांक 15.09.2025 को हिंदी दिवस के पालन के साथ हुई। पखवाड़े के दौरान दि.17.09.2025 से दि. 19.09.2025 तक छः प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें प्रशासनिक हिंदी, निबंध लेखन, वर्णानुक्रम, हस्तलेखन, सुलेखन एवं प्रशासनिक हिंदी शामिल है। तीनों कार्यालयों के पदाधिकारियों ने प्रतियोगिताओं में उत्साह के साथ भाग लिया। दिनांक 23.09.2025 को राजभाषा के संबंध में ज्ञानवर्धन हेतु अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

26 सितंबर को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्रीमती गेळी कृष्णा, सहायक निदेशक ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा हिंदी को गति देने हेतु सभी को प्रेरित किया। श्री पी के लालू, वरिष्ठ उप महालेखाकार पखवाड़ा समारोह के अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों को अपने दैनिक

कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने का आह्वान किया । श्री प्रिन्सन वर्गीस, वरिष्ठ उप महालेखाकार ने हिंदी पखवाडा 2025 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद अर्पित किया ।

प्रोत्साहन योजना के विजेता

प्रतियोगिताओं के विजेता

हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजना के तहत राजभाषा हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों को वरिष्ठ उप महालेखाकारों द्वारा पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए । विजेताओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सभा समाप्त हुई ।

हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक का प्रकाशन

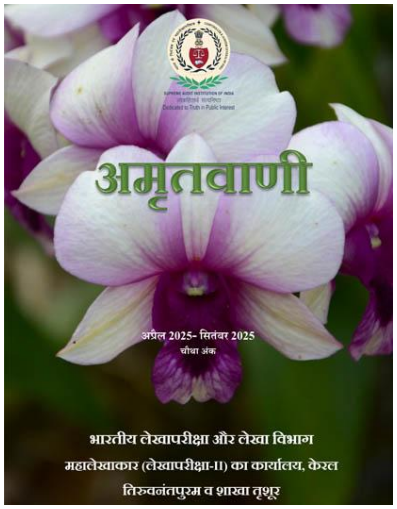

महालेखाकार ने जनवरी 2026 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संयुक्त अर्धवार्षिक हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक का लोकार्पण किया। समिति के समक्ष पत्रिका का ई-रूपांतरण प्रस्तुत किया गया।

https://heyzine.com/flip-book/e4026e1a63.html

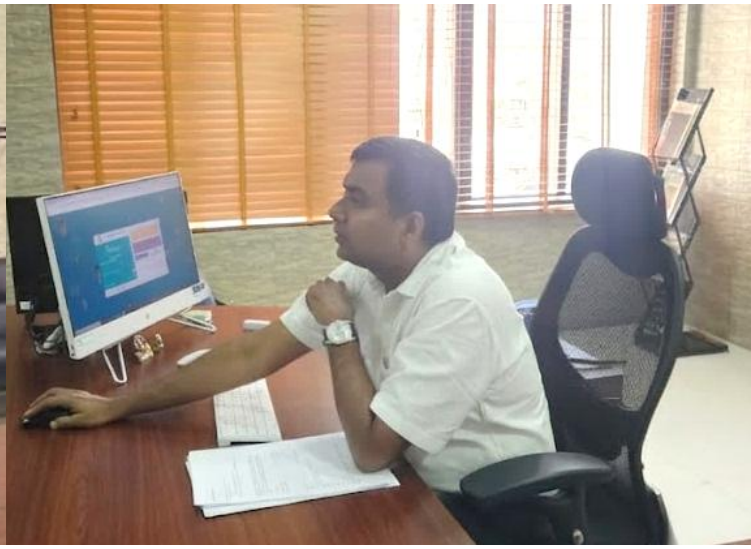

वर्ष 2024-25 हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का पुरस्कार

उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु राजभाषा वैजयंति- द्वितीय स्थान

पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ अनीष डी, वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशा.व लेप.प्र.स.I

उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार-तीसरा स्थान

वर्ष 2025-26 हेतु कार्यशालाएं – कुछ झलकियां

वरिष्ठ अधिकारियों हेतु कार्यशाला

संकायक: सुश्री के आर रंजनी, सहायक निदेशक (रा.भा.) सह सदस्य सचिव (नराकास का.I)

डॉ पी आर हरींद्र शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)/ दूरदर्शन केंद्र

ऑडिट दिवस 2025

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संस्था की ऐतिहासिक स्थापना की स्मृति में और 160 वर्षों से अधिक समय से पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देने में नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के समृद्ध योगदान को उजागर करने के उद्देश्य से हर साल 16 नवंबर को ऑडिट दिवस के रूप में मनाया जाता है। मुख्यालय कार्यालय द्वारा भारत मंडपम, नई दिल्ली में नवंबर 2025 को ऑडिट दिवस 2025 का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन माननीय नियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री संजय के मूर्ति की उपस्थिति में आदरणीय उप राष्ट्रपति श्री सी पी राधाकृष्णन द्वारा किया गया।

मुख्यालय कार्यालय में लेखापरीक्षा दिवस मनाने के तुरंत बाद आनेवाले सप्ताह में भारतीय नियंत्रक-महालेखापरीक्षक संस्था से जुडे विषयों संबंधी कार्यकलाप आयोजित कर जश्न मनाने के लिए क्षेत्रीय कार्यालयों को दिए गए निदेश के अनुरूप केरल में स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा 19 से 25 नवंबर 2025 तक लेखापरीक्षा सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया। ऑडिट सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित गतिविधियों में आंतरिक और बाहरी कार्यशालाएं, आउटरीच कार्यक्रम, सामुदायिक सेवा परियोजनाएं आदि शामिल थीं, जिसका उद्देश्य

आईए एंड एडी कर्मियों और उनके परिवारों के बीच टीम स्पिरिट को बढ़ावा देना, सार्वजनिक सहभागिता को बढ़ाना और संस्था की दृश्यता को मजबूत करना था।

आंतरिक गतिविधियां

19 व 20 नवंबर 2025 को लेखापरीक्षा-I और लेखापरीक्षा-II तथा लेखा व हकदारी कार्यालयों के पदाधिकारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। आंतरिक कार्यशालाओं में लेखापरीक्षा और लेखांकन मानकों को बढ़ाने और नेतृत्व और टीम प्रबंधन कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। श्री राजिलन एम सी, संस्थापक और अध्यक्ष, रिसर्च एकेडमी फॉर क्रिएटिव एक्सीलेंस प्रथम दिन के संकाय थे और दूसरे दिन प्रधान महालेखाकार (कर्नाटक) का कार्यालय की सहायक लेखा अधिकारी श्रीमती रानी वी एस ने वर्चुअल माध्यम से कक्षाएं लीं। आंतरिक कार्यशालाओं में हितधारकों के साथ निर्मित पारदर्शिता और विश्वास पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें नए ऑनलाइन विकास, सर्वोत्तम प्रथाओं और नए नियमों / आदेशों पर अपडेट साझा किए गए।

आउटरीच गतिविधियाँ

राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों पर कार्यशाला का आयोजन 19 नवंबर, 2025 को पूर्वाह्न सत्र में किया गया जिसमें विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के हितधारकों ने भाग लिया और उसी दिन दोपहर में राज्य स्वायत्त निकायों के हितधारकों के लिए भी कार्यशाला आयोजित की गई। 20 नवंबर 2025 को राज्य सरकार के आहरण और संवितरण अधिकारियों के लिए 'लेखांकन, समाधान और डिजिटलीकरण पर डीडीओ, कोषागार और पेंशन प्राधिकरण' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसका उद्देश्य उन्हें इस कार्यालय द्वारा संभाली जाने वाली ए एंड ई से संबंधित प्रक्रियाओं में विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना था। कार्यशाला में राज्य सरकार के सौ से अधिक डीडीओ और कोषागार अधिकारी व्यक्तिगत रूप से और ऑनलाइन शामिल हुए। 21 नवंबर 2025 को कोच्चि शाखा कार्यालय में आयोजित हितधारक सहभागिता बैठक (जीएसटी) का उद्घाटन श्री के पी आनंद, आईएएएस, महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) द्वारा किया गया। श्री शशिधर के, उप निदेशक (सीएस / जीएसटी) - II और श्रीमती उषा श्रीकुमार, उप निदेशक (डीटी-II) ने बैठक में भाग लिया। कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य जीएसटी के तहत ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (ईओडीबी) पहलों के कार्यान्वयन और प्रभाव पर व्यापार, उद्योग और पेशेवर निकायों से प्रत्यक्ष दृष्टिकोण प्राप्त करना था।

आउटरीच गतिविधियों के हिस्से के रूप में, मुख्य कार्यालय और शाखा कार्यालयों में कर्मचारियों के बच्चों के लिए कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । कार्यक्रमों में ड्राइंग, पेंटिंग और वाक्पटुता प्रतियोगिताएं शामिल थीं, जिससे युवा प्रतिभागियों को अपनी रचनात्मकता, प्रतिभा और उत्साह दिखाने का अवसर मिला । प्रतियोगिताएं एक जीवंत और उत्साहजनक माहौल में आयोजित की गईं ।

कर्मचारी सदस्यों के लिए प्रतियोगिताएं

कर्मचारी जुड़ाव गतिविधियों के हिस्से के रूप में, मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के साथ-साथ केरल के चार स्टेशनों में स्थित शाखा कार्यालयों में 19 से 24 नवंबर 2025 तक कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । कार्यक्रमों में रंगोली, वन मिनट टॉक और मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में एक इंटर ऑफिस डिबेट और त्रिशूर शाखा कार्यालय में कर्मचारियों के लिए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शामिल थी, जिसमें केरल के सभी आईए एंड एडी कार्यालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इन प्रतियोगिताओं ने न केवल रचनात्मकता और संचार कौशल का प्रदर्शन किया, बल्कि विभिन्न कार्यालयों में सहयोगियों के बीच सौहार्द और स्वस्थ बातचीत को भी बढ़ावा दिया ।

सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के हिस्से के रूप में, ए एंड ई और ऑडिट कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने 21 नवंबर 2025 को तिरुवनंतपुरम में एक सरकारी संचालित बाल गृह का दौरा किया। विभाग की भूमिका और कार्यों के बारे में बच्चों को एक संक्षिप्त जानकारी दी गई, जिससे उन्हें यह समझने में मदद मिली कि ये कार्यालय सार्वजनिक सेवा में कैसे योगदान करते हैं। सभी बच्चों को खुशी-खुशी बैग और मिठाई दी गई, जिससे मुस्कुराहट और उत्साह का माहौल बन गया। बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, जिससे इस अवसर में जीवंतता और ऊर्जा का संचार हुआ। अधिकारियों ने कार्यालय द्वारा आयोजित दोपहर के भोजन में बच्चों के साथ भाग लिया, जिससे एकजुटता और सद्भाव की भावना को बढ़ावा मिला। इस यात्रा ने आधिकारिक कर्तव्यों से परे सेवा प्रदान करने, सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक बंधन को बढ़ावा देने के लिए हमारे संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाया।

इस परियोजना के हिस्से के रूप में, 24 नवंबर 2025 को मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में सरकारी मेडिकल कॉलेज, तिरुवनंतपुरम के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। विभाग के लगभग 50 अधिकारियों ने सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए रक्तदान किया। यह शिविर सरकारी मेडिकल कॉलेज की टीम के चिकित्सा

समर्थन और मार्गदर्शन के साथ आयोजित किया गया था, जिससे सुरक्षित और कुशल प्रक्रियाएं सुनिश्चित हुईं। इस पहल ने न केवल जीवन बचाने

में योगदान दिया, बल्कि अधिकारियों के बीच सेवा की भावना को भी मजबूत किया।

25 नवंबर 2025 को, ऑडिट वीक सेलिब्रेशन 2025 के समापन दिवस पर, कॉलेज के छात्रों के लिए पूर्वाह्न सत्र में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। अखिल केरल इंटर-कॉलेजिएट क्विज़ प्रतियोगिता (क्यूआरआईओयूएस 2025) में राज्य भर के कॉलेजों से व्यापक भागीदारी हुई, जिसमें लिखित प्रारंभिक परीक्षा, बजर सेमीफाइनल और एक भव्य समापन शामिल था। इस कार्यक्रम में केरल के विभिन्न कॉलेजों की 47 टीमों ने भाग लिया और ज्ञान और टीम वर्क का उत्साहपूर्ण प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में डॉ. के वासुकी, आईएएस, सचिव, लोक शिक्षा विभाग ने भी भाग लिया, जिन्होंने सेमीफाइनल दौर के विजेताओं को सम्मानित किया। विदाई सत्र में, श्री विष्णुकान्त पी बी आईए एंड एएस, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए, उनके प्रदर्शन की सराहना की और विभिन्न संस्थानों के छात्रों की जीवंत भागीदारी को स्वीकार किया।प्रतियोगिता ने न केवल ऑडिट सप्ताह समारोहों में एक गतिशील शैक्षणिक आयाम जोड़ा, बल्कि छात्र समुदाय तक आईए एंड एडी की पहुंच को भी मजबूत किया, जिससे सार्वजनिक जवाबदेही और शासन में संस्था की भूमिका के बारे में जागरूकता को बढ़ावा मिला।

QRIOUS 2025

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

समापन समारोह का आयोजन तिरुवनंतपुरम के टैगोर थिएटर में दोपहर 3.30 बजे किया गया। केरल सरकार के पूर्व मुख्य सचिव श्री के जयकुमार, आईएएस (सेवानिवृत्त) समारोह में मुख्य अतिथि तथा श्री वी कुरियन आईए एंड एएस (सेवानिवृत्त), पूर्व अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक सम्मानित अतिथि थे। सुश्री प्रीति अब्राहम, आईए एंड एएस, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) भी समारोह में उपस्थित थीं। श्री के जयकुमार, आईएएस (सेवानिवृत्त) ने वित्तीय शासन को मजबूत करने और लक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक धन के उपयोग को सुनिश्चित करने में सीएजी की भूमिका - शासन की गुणवत्ता में वृद्धि और वंचित लोगों के लिए बेहतर जीवन पर जोर दिया।

श्री वी कुरियन आईए एंड एएस (सेवानिवृत्त), ने पिछले 25 वर्षों के दौरान विभाग में तकनीकी पक्ष में हो रहे परिवर्तनों के बारे में बात की, जिससे ऑडिट की दक्षता में वृद्धि हुई है। श्री विष्णुकांत पी बी आईए एंड एएस, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ने केरल में एजी कार्यालयों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालते हुए सभा को संबोधित किया।

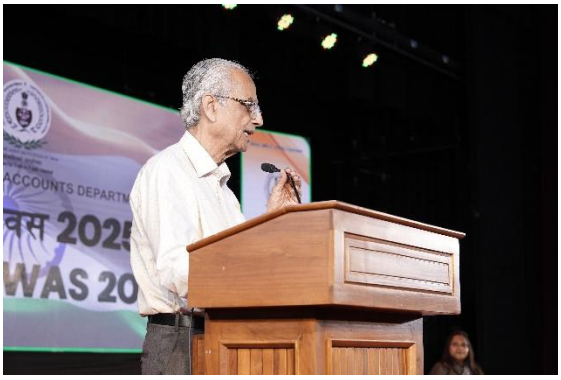

सम्मानित अतिथियों द्वारा भाषण

अपने संबोधन भाषण में महालेखाकार महोदय ने बताया कि दोनों लेखापरीक्षा कार्यालय सभी राज्य सरकार संस्थाओं की लेखापरीक्षा करते हैं, जिनमें 52 विभाग तथा 35,000 से अधिक सरकारी

प्रतिष्ठान सम्मिलित हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, लेखापरीक्षा केवल एक सांविधिक दायित्व मात्र नहीं है; यह सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही को सुदृढ़ करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। हमारी संस्था को प्रत्येक उस क्षेत्र के शासन की समग्र दृष्टि अपनाने का विशिष्ट अवसर प्राप्त होता है, जिसकी हम लेखापरीक्षा करते हैं। वर्तमान में राज्य भर में अनेक महत्वपूर्ण लेखापरीक्षाएं प्रगति पर हैं। महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक कल्याण, कृषि, सामान्य प्रशासन तथा स्थानीय निकायों जैसे प्रमुख क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए एक व्यापक लेखापरीक्षा योजना का कार्यान्वयन कर रहा है। इसी प्रकार, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय वित्त, कर, उद्योग, ऊर्जा, परिवहन, लोक निर्माण, वन तथा पर्यावरण जैसे प्रमुख आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए एक समग्र लेखापरीक्षा योजना लागू करता है। उन्होंने यह भी बताया कि आगे देखते हुए, हमारी लेखापरीक्षा रणनीति राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ निकटता से संरेखित है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि वर्ष 2047 तक भारत की आधी से अधिक आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करेगी, विभाग शहरी स्थानीय सरकारों की लेखापरीक्षा को पुनर्जीवित कर रहा है, जिसमें 101 प्रमुख शहरों में "जीवन की सुगमता" विषय पर एक अध्ययन प्रस्तावित है। महोदय ने बताया कि, हितधारियों के साथ रचनात्मक सहभागिता, हमारे लेखापरीक्षा अभिगम का एक केंद्रीय स्तंभ बनी हुई है। हमारे कार्यालय नियमित रूप से सरकारी सचिवों एवं विभागाध्यक्षों के साथ संवाद करते हैं, विभागीय सहभागिता सत्र आयोजित करते हैं, अधिक परामर्शात्मक प्रवेश एवं अंतिम सम्मेलनों का आयोजन करते हैं, तथा विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों के साथ कार्यशालाएँ एवं ज्ञान-साझाकरण सत्र आयोजित करते हैं। यह प्रयास निरंतर संवाद की एक व्यवस्था स्थापित करने तथा शासन को सुदृढ़ करने हेतु समयोचित एवं कार्यान्वयन योग्य सुझाव प्रदान करने की व्यापक पहल का हिस्सा है। हम अपने कामकाज में डिजिटल परिवर्तन के अनुकूल होते रहते हैं। One IAAD One System (OIOS) कार्यप्रवाह ने हमारी प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है तथा अधिक एकीकृत लेखापरीक्षा नियोजन एवं रिपोर्टिंग को सक्षम बनाया है। हाल ही में प्रारंभ किया गया "CAG-कनेक्ट पोर्टल" एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसने लगभग दस लाख लेखापरीक्षित संस्थाओं को वास्तविक समय में लेखापरीक्षा कार्यालयों से जोडने वाला एक निर्बाध डिजिटल पारितंत्र सृजित किया है। विभाग स्वदेशी रूप से विकसित "CAG-LLM" नामक बड़े भाषा मॉडल पर भी कार्य को आगे बढ़ा रहा है, जो दशकों के संस्थागत ज्ञान को सुलभ करेगा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग की क्षमता का उपयोग करते हुए डेटा-आधारित

लेखापरीक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ करेगा । ये पहलें अधिक गहन एवं प्रभावी लेखापरीक्षा हेतु प्रौद्योगिकी के उपयोग के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं ।

क्षमता निर्माण को निरंतर उच्च प्राथमिकता दी जा रही है । हम आईआईटी दिल्ली, आईआईएम कोषिक्कोड, BISAG-N तथा CEPT, अहमदाबाद जैसे संस्थानों के साथ भी विशेष इनपुट के लिए भू-स्थानिक मानचित्रण से लेकर शहरी परिवहन तक विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं । लेखांकन के क्षेत्र में, भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान के साथ हमारी साझेदारी विभाग के भीतर उन्नत दक्षताओं के विकास में सहायक है ।

हमारी संस्था की पेशेवर उत्कृष्टता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है । भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक वर्तमान में एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन के अध्यक्ष हैं तथा INTOSAI एवं ASOSAI की समितियों एवं कार्य-समूहों में नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभा रहे हैं । हम संयुक्त राष्ट्र की पाँच बहुपक्षीय एजेंसियों के बाह्य लेखापरीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं, तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं एआई-आधारित लेखापरीक्षा कार्यप्रणाली में हमारी विशेषज्ञता को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया है । ये सहभागिताएँ हमारी संस्थागत क्षमता को सुदृढ़ करती हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखापरीक्षा एवं जवाबदेही ढाँचों के निर्माण में भारत की आवाज़ को मजबूत बनाती हैं ।

उन्होंने सभा को सूचित किया कि, उन्हें नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक दायित्व - राज्य लेखा एवं हकदारी के अनुरक्षण का प्रतिनिधित्व करने का भी सौभाग्य प्राप्त है । यह दायित्व स्वतंत्रता-पूर्व काल से ही हमारी संस्था का अभिन्न अंग रहा है । महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय सात दशकों से अधिक समय से राज्य एवं उसके कर्मचारियों की सेवा करते हुए लेखांकन अनुशासन, सत्यनिष्ठा तथा लोक सेवा के सर्वोच्च मानकों को बनाए रखे हुए है । हम इस तथ्य के प्रति पूर्णत: सजग हैं कि उपर्युक्त दायित्वों में हमारा कार्य लाखों हितधारियों के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है; अतः सटीकता, संवेदनशीलता एवं समयबद्धता हमारे प्रत्येक कार्य का मार्गदर्शन करती हैं । उन्होंने सभा को अवगत कराया कि, हमारे कर्मचारियों की निष्ठा एवं सामूहिक परिश्रम की मान्यता के रूप में, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल के कार्यालय को इस वर्ष विभाग के लेखा एवं हकदारी कार्यालयों में उत्कृष्टता हेतु नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का "ऑफिस ऑफ द ईयर अवार्ड" प्रदान किया गया है । यह हम सभी के लिए सामूहिक गर्व का क्षण है ।

महालेखाकार महोदय के भाषण के पश्यात्, उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार उन अधिकारियों को प्रदान किए गए जिन्होंने आधिकारिक कर्तव्यों और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन का प्रदर्शन किया है, साथ ही ऑडिट सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार दिए गए । तिरुवनंतपुरम में सभी आईए एंड एडी कार्यालयों के कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था और उनकी उत्साही भागीदारी ने समारोह को एक यादगार अवसर बना दिया । इस कार्यक्रम ने समुदाय में टीम वर्क, उत्कृष्टता और सौहार्द की भावना को उजागर किया । तदुपरांत, आईए एंड एडी के रिक्रिएशन क्लब ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक जीवंत श्रृंखला का आयोजन किया । कर्मचारियों और उनके परिवारों द्वारा प्रस्तुत इन प्रदर्शनों ने सप्ताह भर चलने वाले उत्सव में एक आनंदमय आयाम जोड़ा ।

कार्यालय में आदरणीय उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (द.क्षे) सुश्री रेबेका मत्ताई का दौरा- कुछ झलकियां

ओणम 2025- कुछ झलकियां

आई ए एडी दक्षिण क्षेत्र फुटबॉल टूर्नामेंट 2025-26 विजेता

आई ए एडी दक्षिण क्षेत्र क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-26 विजेता

गणतंत्र दिवस भारत का एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है, जिसे हर वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है । इसी दिन वर्ष 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ था, जिससे हमारा देश एक गणतंत्र बना । यह दिन हमें हमारे मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों की याद दिलाता है, लोकतंत्र के मूल्यों को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है और देश के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ाता है । यह दिन भारत के इतिहास में एक अहम पड़ाव का प्रतीक है, जब देश ने अपना संविधान लागू करते हुए स्वयं को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्थापित किया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश भर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्र को संबोधित किया जाता है।

गणतंत्र दिवस 2026 समारोह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर भव्य रूप से आयोजित किया गया। यह दिन भारत के संविधान के लागू होने की स्मृति में मनाया जाता है और देश की एकता, विविधता तथा सैन्य शक्ति का प्रतीक है। समारोह की शुरुआत सुबह माननीय प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने से हुई। इसके बाद राष्ट्रपति ने कर्तव्य पथ पर तिरंगा फहराया और 21 तोपों की सलामी दी गई। इस वर्ष के समारोह में एक प्रमुख विदेशी राष्ट्राध्यक्ष को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जिसने भारत के साथ अंतरराष्ट्रीय संबंधों को और मजबूत करने का संदेश दिया। गणतंत्र दिवस परेड इस समारोह का मुख्य आकर्षण रही। इसमें भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना की टुकड़ियों ने शानदार मार्च-पास्ट किया। विभिन्न राज्यों और मंत्रालयों की आकर्षक झांकियाँ ने भारत की सांस्कृतिक विविधता, तकनीकी प्रगति और सामाजिक उपलब्धियों को दर्शाया । इस वर्ष विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत की झलक झांकियों में देखने को मिली।

26 जनवरी 2026 को हमारे देश का 77वां गणतंत्र दिवस प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) केरल, तिरुवनंतपुरम के कार्यालयों द्वारा कार्यालय परिसर में संयुक्त रूप से मनाया गया।

सुश्री प्रीति अब्रहाम, महालेखाकार द्वारा सम्मान गारद के निरीक्षण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत उनके द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। तिरंगा फहराने के बाद मनोरंजन क्लब द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया। उसके बाद लेखा व हकदारी कार्यालय के उप महालेखाकार / प्रशासन श्री बाषा मोहम्मद के

स्वागत भाषण के साथ सार्वजनिक बैठक की शुरुआत हुई। श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार द्वारा स्वतंत्रता दिवस संदेश का पठन किया गया। संदेश पठन के बाद मनोरंजन क्लब द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए । महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) द्वारा नकद पुरुस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए। श्री डानिष मोहम्मद, उप महालेखाकार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ गणतंत्र दिवस समारोह 2026 संपन्न हुआ।

मार्च 2023 को समाप्त अवधि के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की संयुक्त अनुपालन रिपोर्ट वर्ष 2025 के लिए रिपोर्ट सं. 6

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की यह लेखापरीक्षा रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 (2) के तहत केरल के राज्यपाल को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गयी थी। इस रिपोर्ट में केरल सरकार के विभागों की अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम अंतर्विष्ट है। रिपोर्ट को दो भागों में विभाजित किया गया है। रिपोर्ट के भाग I राज्य माल एवं सेवा कर, बिक्री, व्यापार पर मूल्यवर्धित कर, मोटर वाहन कर, उत्पाद शुल्क और स्टाम्प शुल्क और पंजीकरण शुल्क सहित राजस्व क्षेत्र के तहत लेखापरीक्षा टिप्पणियां अंतर्विष्ट करता है । इसमें ₹1,671.25 करोड़ के राजस्व प्रभाव से जुड़े दो विषय विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा सहित 21 पैराग्राफ शामिल हैं।

भाग II में वन एवं वन्यजीव, परिवहन तथा लोक निर्माण सहित आर्थिक सेवाओं के अंतर्गत विभागों को शामिल किया है । इस रिपोर्ट में उल्लिखित अनुपालन लेखापरीक्षा के दृष्टांत, वे हैं जो वर्ष 2022-2023 के दौरान लेखापरीक्षा दौरान ध्यान में आए, और वे भी है जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली लेखापरीक्षा रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2022-2023 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं। भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी। यह रिपोर्ट दि.24.02.2026 को केरला राज्य विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत की गयी थी। प्रमुख निष्कर्षों में कुछ इस प्रकार हैं:

I. सामान्य

वर्ष 2022-23 के लिए राज्य सरकार की कुल राजस्व प्राप्तियां पिछले वर्ष 2021-22 के ₹1,16,640.24 करोड़ के मुकाबले ₹1,32,724.66 करोड़ थी । राज्य का अपना राजस्व ₹87,086.12 करोड़ (कुल प्राप्तियों का 66

प्रतिशत) था; भारत सरकार से प्राप्तियों का हिस्सा ₹45,638.54 करोड़ (कुल प्राप्तियों का 34 प्रतिशत) था।

राजस्व के कुछ प्रमुख शीर्षों पर राजस्व की बकाया राशि ₹28,398.10 करोड़ रुपये थी, जो राज्य के कुल राजस्व का 21.40 प्रतिशत है।

जून 2023 के अंत में, दिसंबर 2022 तक जारी की गई 2,524 निरीक्षण रिपोर्टों से संबंधित ₹5,062.52 करोड़ से जुड़े 14,953 पैराग्राफ बकाया थे।

II. राज्य माल एवं सेवा कर, बिक्री, व्यापार आदि पर मूल्यवर्धित कर

'जीएसटी भुगतान और रिटर्न फाइलिंग पर विभाग की निगरानी पर विषय विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा'

व्यतिक्रमियों को सूचना जारी करने और गैर-फाइलरों से मांग की वसूली के संबंध में सभी चयनित 10 सर्किलों में अनुवीक्षण तंत्र कमज़ोर था।

364 मामलों की जांच के दौरान यह देखा गया कि 44 मामलों में रिटर्न की जांच में धीमी गति के कारण ₹ 103.67 करोड़ रुपये की राजस्व हानि हुई।

आंकड़ों में 374 भिन्नताओं / बेमेलों में से 271 मामलों में अधिनियम के प्रावधानों से विचलन, जिनके लिए विभाग ने उत्तर दिया, और इन अनुपालन विचलनों के परिणामस्वरूप 229 मामलों में ₹683.50 करोड़ की कर की अल्प उगाही और 42 मामलों में कुल आय का बेमेल हुआ।

13 मामलों में ₹139.47 करोड़ रुपये के इनपुट टैक्स क्रेडिट के अनियमित दावे देखे गए। नियम के गलत अनुप्रयोग के कारण, 22 मामलों में इनपुट टैक्स क्रेडिट में ₹136.98 करोड़ का अनुत्क्रमण / अल्प उत्क्रमण हुआ था।

इनपुट सर्विस डिस्ट्रीब्यूशन के माध्यम से इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ उठाने वाले ₹188.89 करोड़ रुपये के 15 मामले देखे गए।

उपलब्ध इनपुट टैक्स क्रेडिट से अधिक इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ उठाने वाले ₹ 291.75 करोड़ रुपये के 51 मामले देखे गए।

लेखापरीक्षा में कर दायित्व के निर्वहन में अनुपालन विसंगतियों के 55 दृष्टांत देखे गए, जिसमें 37 घटनाओं में ₹ 33.42 करोड़ रुपये का कर प्रभाव और 16 घटनाओं में ₹482.09 करोड़ रुपये के कुल आय पलायन शामिल है।

अनुपालन लेखापरीक्षा अनुच्छेद

विशेष आर्थिक क्षेत्र को बिक्री के लिए निर्धारित दर पर कुल आय पर कर लगाने की चूक के परिणामस्वरूप ₹0.58 करोड़ के कर और ब्याज की अल्प उगाही हुई।

इनपुट टैक्स क्रेडिट के अयोग्य अनुदान के परिणामस्वरूप ₹0.92 करोड़ के कर और ब्याज की अल्प उगाही हुई।

III. वाहनों पर कर

परिवहन वाहनों के फिटनेस प्रमाण-पत्र की समाप्ति / विलंबित नवीनीकरण पर ₹8.82 करोड़ रुपये की राशि का जुर्माना और अतिरिक्त शुल्क का वसूली नहीं किया गया।

अस्थायी / विशेष परमिट जारी करने के लिए ₹4.24 करोड़ के सेवा प्रभार का गैर-संग्रहण।

IV. राज्य उत्पाद शुल्क

राज्य आबकारी विभाग की प्रवर्तन गतिविधियों पर विषय विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा लेखापरीक्षा में देखा गया कि आबकारी / नारकोटिक ड्रग्स और साइकोट्रॉपिक पदार्थों (एनडीपीएस) अपराधों की जांच पूरी करने में प्रक्रियात्मक चूक / देरी हुई। एनडीपीएस अपराधों का पता लगने पर सभी संगत धाराओं को लागू नहीं किया गया था।

एक जिले से दूसरे जिले में ताड़ी के परिवहन के लिए अतिरिक्त परमिट शुल्क में ₹8.31 करोड़ गैर-संग्रहण हुआ ।

लाइसेंसधारी के निदेशक मंडल के पुनर्गठन के बहाने विदेशी शराब लाइसेंस के अंतरण के कारण लाइसेंस शुल्क में ₹0.64 करोड़ की अल्प उगाही हुई।

निदेशक मंडल के अनधिकृत पुनर्गठन के लिए शुल्क और जुर्माने में ₹0.24 करोड़ रुपए की गैर-उगाही हुई थी।

अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

ताड़ी की दुकानों से अतिरिक्त वार्षिक किराये की वसूली न होने के कारण ₹0.43 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हूआ।

V. स्टांप ड्यूटी एवं पंजीकरण शुल्क

भूमि के गलत वर्गीकरण के कारण ₹0.33 करोड़ रुपये के राजस्व का अल्प संग्रहण / हानि।

भाग II : आर्थिक सेवाएं

रिपोर्ट के भाग II चयनित कार्यक्रमों और गतिविधियों की लेखापरीक्षा और चार सरकारी विभागों, अर्थात् लोक निर्माण, वन और वन्यजीव, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और उनके अंतर्गत स्वायत्त निकायों की अनुपालन लेखापरीक्षा से उत्पन्न मामलों से संबंधित है। प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

I. सामान्य

कुल पूंजीगत बजट प्रावधान ₹3,551.65 करोड़ रुपये था। विभागों द्वारा ₹2,919.08 करोड़ रुपये (82.18 प्रतिशत) उपगत किया गया था। कुल राजस्व बजट प्रावधान ₹4,640.15 करोड़ रुपये था और विभागों द्वारा ₹3,664.71 करोड़ रुपये (78.98 प्रतिशत) का व्यय किया गया था।

जून 2023 के अंत में, जारी की गई 558 निरीक्षण रिपोर्टों से संबंधित 3,011 पैराग्राफ बकाया थे।

II. अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

परिवहन विभाग

सड़क सुरक्षा निधि में राशि का अल्प / गैर-अंतरण

वाहन मालिकों से एकमुश्त उपकर के गैर-अंतरण / अल्प अंतरण और सड़क सुरक्षा निधि में चक्रवृद्धि शुल्क ने सड़क सुरक्षा परियोजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रभावित किया। वर्ष

2018-19 से 2022-23 तक की अवधि के लिए अल्प अंतरण ₹27,930.88 लाख था।

वन एवं वन्यजीव विभाग

केरल वन और वन्यजीव विभाग द्वारा सागौन वृक्षारोपण के प्रबंधन में चूक

निर्धारित कार्य योजनाओं का पालन न करने और वृक्षारोपण तथा रखरखाव गतिविधियों में कमियों के कारण सागौन वृक्षारोपण प्रबंधन में चूक हुई। इन चूकों में प्लेटफॉर्म संरचनाओं की कमी, समय-समय पर रखरखाव का अभाव, खरपतवारों को हटाने, पेड़ों के बीच निर्धारित अंतराल का उल्लंघन करते हुए वृक्षारोपण, यांत्रिक / सिल्वीकल्चर थिनिंग में देरी, चयनित कटाई का संचालन नहीं करना, परिपक्व सागौन वृक्षों का निष्कर्षण नहीं करना और छिद्रकों के हमले को रोकने के लिए समय पर कार्रवाई की कमी शामिल थी।

लोक निर्माण विभाग

विभागीय मलबे की लागत की अल्प वसूली - ₹56.98 लाख

विभागीय रूप से जारी मलबे की लागत की वसूली करते समय लागत सूचकांक लागू करने में विफलता के परिणामस्वरूप ठेकेदार को ₹56.98 लाख का अनुचित लाभ हुआ था।

निर्णय की तारीख से चार साल बाद भी मध्यस्थता निर्णय की गैर-प्राप्ति

केरल राज्य परिवहन परियोजना ने पंचाट की तारीख से चार साल बाद भी ₹32.27 करोड़ रुपये (जिसमें ₹12.40 करोड़ रुपये का ब्याज भी शामिल है) के मध्यस्थता फैसले की वसूली करने के लिए कार्रवाई शुरू नहीं की।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के चौथे अंक की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री अतुल कृष्ण डी का लेख 'जब पानी बढ़ता है: बाढ़ किस तरह ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को बदल रही है', श्री पुष्पेंद्र पँवार की कहानी 'बक्सा', श्री अनुराग शुक्ला की कविता 'जिन्दगी', श्री विकास खोबड़ा की कविता 'घर की सरहदें' प्रशंसनीय हैं । कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक)
कर्नाटक, बेंगलूरु

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक की ई पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
छत्तीसगढ़, रायपुर

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं । पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेप),
हरियाणा, चंडीगढ़

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के चौथे अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक होने के साथ ही पत्रिका की समग्र साज-सज्जा बेहद उत्कृष्ट है । पत्रिका "अमृतवाणी" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है । इस अंक में निहित सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय एवं रोचक हैं; विशेषकर, शहर की

खामोशियाँ, जुबान पे ताला, मौन की भीड़ और बोलती चुप्पी, बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन की लतः एक बढ़ता संकट एवं भव्य विवाह समारोहः प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम आदि।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डली को बधाई । पत्रिका की अनवरत प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह),
पटना, बिहार

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "अमृतवाणी" पत्रिका के चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यवाद । इस पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं । पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है । राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है ।पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़

,,

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "अमृतवाणी" के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है, विशेष तौर पर ज़िन्दगी, ऑडिट, छोटे छोटे प्रयास बड़े-बड़े सपने, बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन की लतः एक बढ़ता संकट, भव्य विवाह समारोहः प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
भोपाल

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका की विषय-वस्तु, प्रस्तुति तथा समय गुणवता अत्यंत प्रशंसनीय है। इस अंक में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा समसामयिक विषयों पर प्रस्तुत लेख न केवल जानवर्धक हैं, बल्कि वे कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता, बौद्धिक दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त करते हैं । पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषतः 'जिंदगी', 'ऑडिट', 'मंजिल भी है, रास्ता भी है, सोचता क्या है, अरे मुमकिन भी है', 'मौन की भीड़ और बोलती चुप्पी, 'छोटे-छोटे प्रयास और बड़े-बड़े सपने' एवं 'जब पानी बढ़ता है। बाढ़

किस तरह ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को बदल रही है' जानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
प्रयागराज

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "अमृतवाणी" का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सुंदर, सरल एवं पठनीय हैं एवं सभी रचनाकारों के साहित्यिक कौशल एवं हिन्दी भाषा से घनिष्ठता का प्रतीक हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। हमें पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि राजभाषा हिन्दी के प्रति सम्मान, अपनत्व और प्रयोग की भावना को भी और अधिक सुदृढ़ करेगा।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक),
देहरादून,

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उदेश्यपूर्ण है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार की रचना 'मेरा बुलेट', सुश्री रुचिका, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'मंजिल भी है, रास्ता भी है सोचता क्या है, अरे मुमकिन भी है' तथा श्री ओम प्रकाश मीना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'शहर की खामोशियाँ' विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं। यह पत्र उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संकलित संस्मरण, लेख, कविताएं आदि रचनाएं विचारोत्तेजक एवं साहित्यिक संवेदना से युक्त हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका जैसे "जिंदगी", "मैंने हमेशा कोशिश

की", "मेरी सहेली", "घर की सरहदें", "जव पानी बढ़ता है: बाढ़ किस तरह ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को बदल रही है", "मंजिल भी है, रास्ता भी है, सोचता क्या है अरे मुमकिन भी है", -भव्य विवाह समारोहः प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम" अत्यंत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक और हृदय को भावविभोर करने वाली है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई एवं शुभकामनाओं का पात्र है।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखंड, देहरादून

,,

महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक पत्रिका 'अमृतवाणी' की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई के पात्र है। 'अमृतवाणी' पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

,,

महोदया,

आपके कार्यालय की अर्ध वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री अनुराग शुक्ला की कविता "ज़िंदगी", सुश्री शेबा पी एच का लेख "मेरा बुलेट", सुश्री निशा जी पिल्लई की कहानी "छाँव में बसी कहानियां", श्री रवींद्र कुमार की कहानी "छोटे कदमों की राहः एक बदलाव की कहानी", सुश्री जे आर मालविका का लेख "बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन की लतः एक बढ़ता संकट" एवं श्री योगेंदर सिंह का लेख "दुनिया की 5 सबसे पुरानी जीवित भाषाएँ" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'अमृतवाणी' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महालेखाकार (ले व ह), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम

,,

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र सं. लेप/हिंदी कक्ष/ई-गृह पत्रिका/2025-26 दिनांक 03.02.2026 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "अमृतवाणी" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "अमृतवाणी" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री ओम प्रकाश मीना की रचना 'शहर की खामोशियाँ', सुश्री शेबा पी एच की रचना 'मेरा बुलेट', श्री रवींद्र कुमार की रचना 'छोटे

कदमों की राहः एक बदलाव की कहानी', सुश्री उषा बर्टी की रचना 'आशीर्वाद' इत्यादि सराहनीय है । आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

,,

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण व पृष्ठ सज्जा अत्यंत आकर्षक व सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उल्लेखनीय व आत्मीय है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा,रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ । सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य काययालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है । निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

क्र. सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री अनुराग शुक्ला	जिंदगी
2.	श्री विकास खोबड़ा	घर की सरहदें
3.	श्री राकेश गोदारा	जुबान पे ताला
4.	सूश्री उषा	आशीर्वाद
5.	सूश्री मैथिली जे.आर.	भव्य विवाह समारोह : प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम
6.	श्री योगेंद्र सिंह	दुनिया की पाँच सबसे जीवित भाषाएँ

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय),
मुंबई,

,,

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर